राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 25.00 संख्या 113
सूरमा
DHEERAJ VERMA

'विश्वास'! कहने में तो महज यह एक शब्द है। लेकिन जब यह भावना टूटती है, या खत्म हो जाती है तो अपने पीछे एक उजड़ा हुआ संसार छोड़ जाती है-

इन्सान अपने परायों का फर्क भूल जाता है। दोस्त और दुश्मन में फर्क कर पाने की क्षमता खत्म हो जाती है। और इन्सान उसी की जान का प्यासा हो जाता है, जो शायद उसके लिए अपनी जान भी दे सकता है-

तू अपने-आपको मानवता का रक्षक और आतंकवाद का भक्षक कहता है नागराज! पर मुझे तेरा विश्वास नहीं है। आज तेरी वजह से जैसे दिल्ली तड़प रही है, वैसे मैं भी तुझे तड़पाऊंगा!

नागराज तड़पता नहीं, सिर्फ तड़पाता है परमाणु! बुरे को अच्छा बनने में सालों लग सकते हैं, लेकिन अच्छे को बुरा बनने के लिए सिर्फ एक पल चाहिए।...

...इस बात को तूने साबित कर दिया है! आज तेरे बिगड़े दिमाग को ठिकाने लगाकर मैं यह साबित कर दूंगा कि तू है एक मच्छर, और नागराज है...

कथा एवं चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विनोद, कांबले
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

इस भीषण टकराव का भी कारण था, विश्वास का नष्ट हो जाना। और विश्वास के इस पेड़ की जड़ों को एक-एक करके काटने का काम इस टकराव से बहुत पहले ही शुरू हो चुका था-
'दिल्ली है दिल हिन्दुस्तान का' सच बात है। फर्क सिर्फ इतना है कि इन्सान के सीने में दिल बाईं तरफ धड़कता है, और भारत माता के सीने में दिल 'दिल्ली' दाईं तरफ धड़कता है-
बदरपुर पावरस्टेशन
BADARPUR POWER STATION
भारत की राजधानी होने के साथ-साथ दिल्ली अपराधों की भी राजधानी बन गई है। पर्यावरण प्रदूषण की दौड़ में भी सबसे आगे है हमारी राजधानी-
और अब संक्रामक बीमारियां भी हिन्दुस्तान के दिल में अपना डेरा जमाती जा रही हैं-
हर मौसम बदलाव के साथ दिल्ली में एक जानलेवा बीमारी अपना पैर जमा देती है-
कभी चिकन पॉक्स, कभी जॉन्डिस, कभी प्लेग और कभी घातक डेंगू-
मुझे दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि ये अब नहीं रहे।
नहीं!
हर बीमारी अपने रास्ते में छोड़ जाती है, मृतकों की एक लम्बी लिस्ट। और लोग कभी सरकार को दोष देते हैं और कभी भगवान को-
लेकिन कभी किसी के दिमाग में यह ख्याल नहीं आया कि ये बीमारियां किसी सुनियोजित षड्यंत्र का हिस्सा भी हो सकती हैं-
गरीब दवाई-उत्पादक की यह तुच्छ भेंट स्वीकार करो, सर्जन!...
...पन्द्रह लाख रुपये!
लेकिन आप यह पहले से कैसे बता देते हो कि फलानी बीमारी दिल्ली में फैलने वाली है। ताकि हम पहले से उस बीमारी की दवा का स्टॉक बनाकर रखें और फिर उसे मुंह मांगे दामों पर बेचें?

वह इसलिए क्योंकि बीमारियां हमारे इशारे पर नाचती हैं। हमारे कहने पर ही वे आती हैं, और हमारे कहने पर ही जाती हैं।
यह तेरा पहला सवाल था, इसलिए जवाब दे दिया। आइन्दा अगर तेरी जुबान ने हमारे सामने हरकत की...
...तो इसका आपरेशन करके जड़ से निकाल दूंगा। समझ गया न घनश्याम दास?
ऐ, ऐ!
समझ गया प्रभु, माफ कर दो और जाने की इजाजत दो!
घनश्याम दास के जाते ही सर्जन, एक दीवार की तरफ मुड़ गया—
घनश्याम ने जो सवाल किया है, वह औरों के दिमाग में भी उठने लगा होगा। अब हमारे पास ज्यादा वक्त नहीं बचा है।
मुझे इस बारे में तुरन्त अपने पार्टनर से बात करनी होगी।
ढनाक
तड़ाक
यह आखिर हो क्या रहा है? पार्टनर काफी गुस्से में लगता है!
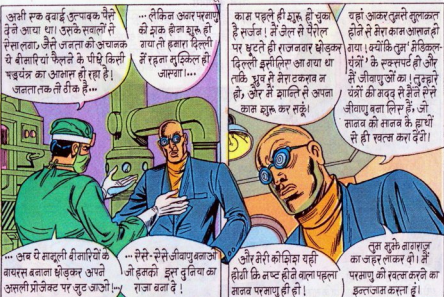
★ डॉक्टर वायरस के बारे में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: 'डॉक्टर वायरस' और 'हत्यारा कौन'
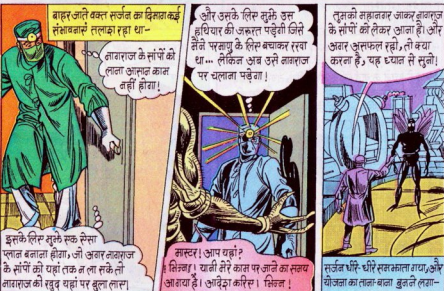
बाहर जाते वक्त सर्जन का दिमाग कई संभावनाएं तलाश रहा था-

नागराज के सांपों को लाना आसान काम नहीं होगा!

इसके लिए मुझे एक ऐसा प्लान बनाना होगा, जो अगर नागराज के सांपों को यहां तक न ला सके तो नागराज को खुद यहां पर बुला लाए!

और उसके लिए मुझे उस हथियार की जरूरत पड़ेगी जिसे मैंने परमाणु के लिए बचाकर रखा था... लेकिन अब उसे नागराज पर चलाना पड़ेगा!

मास्टर! आप यहां? जिन्न! यानी मेरे काम पर जाने का समय आ गया है। आदेश करिए। जिन्न!

तुमको महानगर जाकर नागराज के सांपों को लेकर आना है। और अगर असफल रहो, तो क्या करना है, यह ध्यान से सुनो!

सर्जन धीरे-धीरे समझाता गया, और योजना का ताना-बाना बुनने लगा-

एक ऐसी योजना जिसमें नागराज खामख्वाह फंसने जा रहा था-

... और फिर जीवो के शरीर से हिटलर की आत्मा के बाहर निकलते ही वह चिल्ड्रेन वायरस निष्क्रिय हो गया। वरना आज खबर सुनाने के बजाय हम सब खबर बन गए होते भारती! ★

गोले-बारूद और परमाणु हथियारों के बाद अब दुनिया के सामने सबसे बड़ा खतरा रासायनिक और जैविक हथियार ही हैं।...

★ विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: तानाशाह

तुम भी हमारे साथ चलो राज।
म... मैं! वहां तो नागराज जरूर पहुंचेगा। सांप-वांप भी छोड़ेगा। और सांप देखकर तो मैं बेहोश हो जाऊंगा!
हा हा हा! मुझे पता था कि तुम यही कहोगे। पर क्या करूं? तुम्हारी चुटकी लेने में बड़ा मजा आता है।
यह कौन हो सकता है, जो तुमको ढूंढ रहा है? और वह भी खुलेआम?
अभी पता चल जाएगा, भारती! वह नागराज को ढूंढ रहा है...
...और नागराज उसे जरूर मिलेगा!
बेस्ट ऑफ लक नागराज!
नागराज को शुभकामनाओं की सख्त जरूरत थी—
क्योंकि वह एक ऐसे दरिया में कूदने जा रहा था, जिसमें तैरना उसे नहीं आता था—
कहां है नागराज? कहां छुपा बैठा है वह चूहा? तुम कीड़ों को बचाने वह आखिर आता क्यों नहीं?...
Bright

... क्या 'ड्रेगन फ्लाई' की शक्ल देख-कर टॉयलेट में घुस गया वह चूहा ?... खैर ! महानगर की तबाही का जिम्मेदार मैं उसी को मानूंगा।...
... क्योंकि जब तक नागराज मेरे सामने नहीं आएगा, तब तक मैं इसी तरह अपनी भूख मिटाता रहूंगा !
'ड्रेगन फ्लाई' की लार बिजली के खंभे से टकराई, और खंभा मोम की तरह पिघलना शुरू हो गया-
ड्रेगन फ्लाई की जीभ लपलपाई और मोम की तरह पिघला खंभा जीभ में सिमटता हुआ उसके पेट में जा पहुंचा-
आहा ! बड़े दिनों बाद भूख मिटाने का पर्याप्त सामान मिल रहा है।
मक्खी की तरह खाना खाने का अपना अलग ही आनन्द है।
पहले मक्खी की तरह खाने की वस्तु पर लार गिराकर उसे गला दो।...
...और फिर चाट जाओ। न चबाने का झंझट, न निगलने का। कभी आदमी का स्वाद नहीं लिया मैंने...
... आज इस कोमल-कोमल लड़की का शरीर गलाकर, चाटकर खाया जाए।
'ड्रेगन फ्लाई' की घातक लार, भय से जड़ हो गई लड़की की ओर लपकी-

लेकिन इससे पहले कि लार, उस लड़की के शरीर तक पहुंच पाती, उसका शरीर रास्ते से हटा लिया गया-
ओह! तो इस शहर में बहादुर भी मौजूद हैं। कौन है तू जो अपनी जान का सौदा इस लड़की की जान से करने के लिए आ गया है?
मैं वही हूं, जिसे ढूंढने के लिए तू इतनी तबाही मचा रहा है।...
... और अब इस तबाही में नष्ट हुई एक-एक चीज का मुआवजा मैं तेरी एक-एक हड्डी तोड़कर लूंगा!
आह! वार तो जोरदार था, नागराज! लेकिन मेरे शरीर में टूटने के लिए हड्डियां हैं ही नहीं ...
भड़ाम
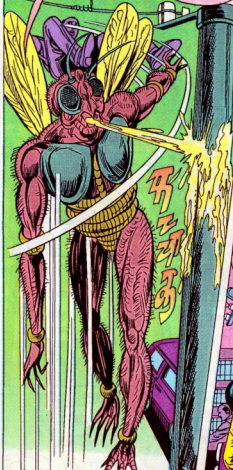
... लेकिन तेरे शरीर में तोड़ने के लिए हड्डियां हैं!
तड़ाक
आह! इसका वार तो आश्चर्यजनक रूप से जोरदार है!
BPL
एक ही वार में सर घूम गया! ऐसे तो यह सचमुच मेरी हड्डियां तोड़ देगा!

धड़ाककक
TATA
इसके दो-तीन वार अगर और खा लिए तो शायद मैं बेहोश ही जाऊंगा। इस पर अपनी दूसरी शक्तियों का वार करना होगा।
जैसे विष फुंकार का!
विष फुंकार की तीव्रता से 'ड्रेगन-फ्लाई' जरा सा चकराया-
फूऊऊऊ
और शिथिल पंखों के साथ, सड़क पर आ गिरा-
आह! विष फुंकार! तू शारीरिक शक्ति में मुझसे नहीं जीत पाया, तो गलत तरीके का इस्तेमाल करने लगा?
लेकिन अगर तेरे पास विषफुंकार है तो मेरे पास भिन्न-भिन्न किस्मों की लारें हैं!
नागराज ने अब तक लार का असर अपनी आंखों से नहीं देखा था-
लेकिन फिर भी वह समझ रहा था कि यह लार खतरनाक साबित हो सकती है-

नागराज लार के रास्ते से तेजी के साथ हट तो गया-
लेकिन फिर भी कुछ छींटे उसके शरीर पर पड़ ही गए-
आह! यह लार तो मेरे शरीर को गला रही है!
इसको हमला करने का एक भी मौका देना मूर्खता होगी। मेरे नागों के दंश से यह काबू में आ जाएगा।...
... उस विष की मात्रा से यह मरेगा तो नहीं, लेकिन लड़ने की स्थिति में भी नहीं रहेगा।
लेकिन नागराज का यह वार देखकर ड्रैगन-फ्लाई घबराया नहीं-
बल्कि और खुश हो गया-
आहा! आखिर मैंने नागराज को नाग छोड़ने पर मजबूर कर ही दिया।
अब अपनी विशेष लार का वार करके, इनको उस लार के खोल में कैद कर लेना है। और फिर इन नागों को लेकर यहां से निकल लेना है। क्योंकि उसके बाद नागराज से लड़कर जान देने की कोई तुक नहीं है।
लार के खोल, नागों को ढकते ही तेजी से सूखने लगे, और नाग उस कड़े खोल में कैद होने लगे-
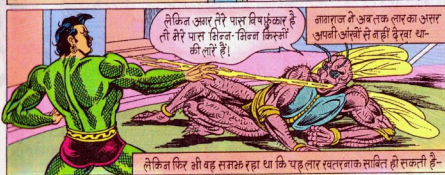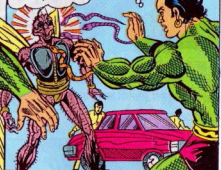
'ड्रैगन-फ्लाई' ने लपककर लार के खोल में ढके सांपों की लकड़ी के गट्ठर की तरफ उठा लिया–
आहा! मेरा काम तो हो गया नागराज! अब मैं यहां से जा रहा हूं।...पर तुझे इस लायक नहीं छोड़-कर जाऊंगा कि तू मेरे पीछे आ सके!
तेरे शरीर को मैं अपनी विशेष 'लार-गोली' से छेद कर रख दूंगा!
लार के छोटे-छोटे गोले; 'ड्रैगन-फ्लाई' के मुंह से निकलकर गोली की सी रफ्तार से–
नागराज के शरीर में धंसने लगे। और नागराज कराह उठा–
सटट
सट्
आऽऽऽह! गोलियों की तरह, इस लार के छेदों को भी मेरे शरीर के सर्प भर तो देंगे।...
...लेकिन इस लार के मेरे शरीर में घुसने से मुझे असहनीय जलन हो रही है।
आहा! तू तो तड़प रहा है। मैं बेकार ही तुझसे डरकर भागने की सोच रहा था! तू तो बड़ा कमजोर है। अब तो मैं तुझे खत्म करके ही जाऊंगा!
अब मेरी लार गोली तुझे उठने नहीं देगी, और मेरा 'लार-घेरा' तुझे गलाकर रख देगा!
इसका यह वार तो मुझे कुछ भी कर सकने का मौका ही नहीं दे रहा है। इसकी 'लार-गोली' को रोकना होगा। पर कैसे? एक मिनट! जब-जब यह लार का वार करता है, तब-तब इसके पेट पर बने तीनों छल्ले दबते हैं।

यानी यही थल्ले इसकी लार ग्रंथियां हैं, और इनमें ही इसकी अलग-अलग किस्म की घातक लारें भरी हुई होनी चाहिए।...
...अगर इन लार ग्रंथियों की लार निकल जाए तो यह मुझ पर 'लार गोली' की हमला नहीं कर पाएगा। और इन ग्रंथियों में चीरा लगाने का काम मेरे नाग-फनी सर्प आराम से कर देंगे!
खच्च्च्च
नागफनी सर्प हवा में लहराये-
और चिर चुकी लार ग्रंथियों में से लार तेजी से नीचे गिरने लगा-
ओह! मैं इसकी असहाय समझ रहा था, और इसने मेरी लार ग्रंथियों को फाड़ डाला! आइन्दा इन ग्रंथियों पर कोई 'सुरक्षात्मक-कवच' पहनकर आना होगा। अब यह मुझे नहीं छोड़ेगा। यहां से तुरन्त फूटलेना चाहिए।
वाह! मेरा सोचना सही निकला!
अगले ही पल-'ड्रेगन-फ्लाई' आकाश की तरफ लहरा गया-
ओह! यह भाग रहा है। अब इस 'लार-घेरे' से बचना और इसको पकड़ने का काम एक साथ ही करना होगा।
बिना कोई वक्त गंवाए, नागराज, नाग-रस्सी पर लहराकर, 'लार-घेरे' से बाहर निकलता हुआ, ड्रेगन-फ्लाई के नजदीक पहुंच गया-

ओह! अपनी भरपूर शक्ति से लगाई गई छलांग के बावजूद भी मैं इस तक नहीं पहुंच पाऊंगा! लेकिन फिर भी मैं इसे भागने नहीं दूंगा!
नागराज के दूसरे हाथ से सर्प-रस्सी निकली-
और 'ड्रेगन-फ्लाई' के पैर में जाकर लिपट गई-
... लेकिन मैं अपना काम तो पूरा करके ही रहूंगा! चाहे यहां से भाग पाऊं या नहीं!
ओह! यह मेरे पैर से लिपट गया है! अब इसका वजन लेकर मैं उस हैलीकॉप्टर तक नहीं पहुंच पाऊंगा, जिसके जरिए मैं यहां तक आया था और जिससे मुझे यहां से भागना था।...
ड्रेगन-फ्लाई का हाथ घूमा, और 'लार-खोल' में बन्द सांप, हैलीकॉप्टर के अन्दर जा गिरे-

कहानी 19 वें पृष्ठ से जारी

अगर मैं पकड़ा जाऊं तो सर्जन ने मुझसे यही बताने को कहा था। लेकिन पता नहीं सर्जन नागराज तक गलत जानकारी पहुंचाकर आखिर करना क्या चाहता है?
ड्रेगन-फ्लाई के मुंह से यह जानकारी पाकर नागराज भी स्तब्ध रह गया-
परमाणु! लेकिन वह तो मेरी ही तरह मानवता का रक्षक है।
दिल्ली का रखवाला। दिल्ली की आंखें कहते हैं उसको! लेकिन उसको मुझे मरवाने की या महानगर को नुकसान पहुंचाने की क्या जरूरत पड़ गई?
अगर ड्रेगन-फ्लाई सच बोल रहा है तो मामला गंभीर है। मुझे इस मामले की तह तक पहुंचना होगा!
धड़ड़ड़मम
जल्दी ही नागराज, राज के रूप में भारती से सलाह-मशविरा कर रहा था-
और फिर मेरे सांप उसने हैलीकॉप्टर में फेंक दिए। हैलीकॉप्टर का पीछा मैं नहीं कर सकता था। इसीलिए मैंने 'ड्रेगन-फ्लाई' से पूछ-ताछ की, और उसने अपने पीछे परमाणु का हाथ होने की बात कही।
अब सही हो या गलत, मुझे इस रहस्यमय मामले की तह तक तो पहुंचना ही होगा!
तुम्हारा तो अपने सर्पों से मानसिक सम्पर्क रहता है। उससे तुम पता कर सकते हो कि इस वक्त तुम्हारे सर्प कहां हैं?...
... और फिर वहां जाकर तुम इस मामले को सुलझा सकते हो!

मेरे सर्प मानसिक संकेत सिर्फ होश में रहने पर ही भेज सकते हैं। तार के खोल में ढकने के बाद ऑक्सीजन न मिलने के कारण वे जरूर बेहोश ही गए हैं। क्योंकि फिलहाल उनसे मेरा मानसिक सम्पर्क टूटा हुआ है।

मुझे दिल्ली जाना होगा, भारती! लेकिन नागराज के रूप में नहीं, राज के रूप में। क्योंकि नागराज पर छिपे हुए दुश्मन घातक वार भी कर सकते हैं!

ठीक है। तुम राज के रूप में ही जाओ। 'भारती कम्युनिकेशंस' की तरफ से दिल्ली में फैल रही संक्रामक बीमारियों पर एक टी.वी. रिपोर्ट तैयार करने के लिए। इससे यह सवाल भी नहीं उठेगा कि आखिर राज दिल्ली में क्या करने गया था! और वह भी तब, जब नागराज भी वहां पर था!
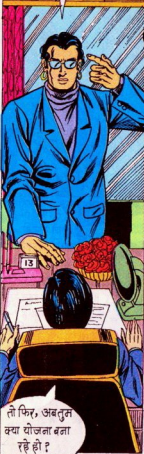
अच्छा ख्याल है भारती! तुम मेरा जाने का इंतजाम करो! तब तक मैं 'ड्रेगन फ्लाई' के खिलाफ रिपोर्ट लिखवाकर आता हूं!

मैं तुम्हारे ट्रेन के टिकट बुक करा देती हूं। क्योंकि सारे हैलीकॉप्टर रिपोर्ट लाने गए हैं। और दिल्ली की आज की फ्लाइट जा चुकी है!

तो फिर, अब तुम क्या योजना बना रहे हो?

नागराज अगर प्लेन से दिल्ली जाता तो वह घटना शायद नहीं घटती-

जो अब घटने वाली थी-

गड़बड़ आखिर हो ही गई, वायरस! ड्रेगन फ्लाई पकड़ा गया! लेकिन उसने मेरे कहे अनुसार नागराज को अपने मालिक का नाम परमाणु बताया है!

अब नागराज यहां पर जरूर आएगा! और उसके परमाणु से मिल पाने के पहले ही हमको परमाणु का काम तमाम कर देना है।

पकड़ा गया वह मूर्ख?

लेकिन मेरा काम तो कर दिया है न उसने?

हां! नागराज के सांप आ गए हैं। अब मैं जीवित कोशिका को जरूर बनाऊंगा।
वह तो ठीक है। लेकिन परमाणु के लिए तुमने क्या बनाया है ? वह तो दिखाओ!
अभी दिखाता हूं। आओ मेरे साथ!
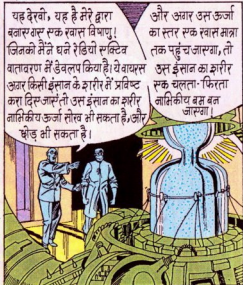
यह देखो, यह है मेरे द्वारा बनाए गए एक खास विषाणु! जिनको मैंने घने रेडियो एक्टिव वातावरण में डेवलप किया है। ये वायरस अगर किसी इंसान के शरीर में प्रविष्ट करा दिए जाएं तो उस इंसान का शरीर नाभिकीय ऊर्जा सोख भी सकता है, और छोड़ भी सकता है।
और अगर उस ऊर्जा का स्तर एक खास मात्रा तक पहुंच जाएगा, तो उस इंसान का शरीर एक चलता-फिरता नाभिकीय बम बन जाएगा।

वाह! तुम तो जीनियस हो वायरस! सुपर जीनियस! लेकिन अपने शरीर को अणुबम बनाएगा कौन ? जानते-बूझते मौत को गले कौन लगाएगा ?

ढूंढने से तो शैतान भी मिल जाता है। मैंने भी ढूंढ लिया है। इससे मिलो। यह है रीको। ब्लड-कैंसर के आखिरी स्टेज का मरीज! रेडियो थेरेपी करा-कराकर इसका शरीर मेरा वायरस सहने लायक हो गया है।
इसका बाप एक छोटा-मोटा चोर था। परमाणु ने उसको अंदर करवा दिया। इस गम में इसकी मां ने पागल होकर खुदकुशी कर ली! अब इसकी जिन्दगी का एक ही मकसद रह गया है। परमाणु की मौत! और परमाणु को वह मौत देने वाला हथियार इसे बनाऊंगा मैं!
इधर परमाणु को मौत के दरवाजे की तरफ धकेलने की कोशिशें की जा रही थीं-

और उधर- दिल्ली की आंख परमाणु, दिल्ली की हिफ़ाजत में जुटा हुआ था-
ओह! वह फाइटर-प्लेन दुर्घटनाग्रस्त होकर नीचे गिर रहा है!...
...उसका पायलट कूद तो गया है, लेकिन उसका पैराशूट नहीं खुल रहा है!...
...इस प्लेन को रिहायशी इलाके पर गिरने से तो रोकना ही होगा...

सुरमा
...लेकिन उससे पहले पायलट की जान बचानी होगी। उसकी पैराशूट खोलने वाली डोरी फंस गई है। इसलिए अगर पैराशूट को बांधने वाला यह हुक खींच लिया जाए...
...तो पैराशूट खुल जाएगा, और पायलट की जान सुरक्षित हो जाएगी। अब जेट प्लेन के गिरने की दिशा बदली जाए...
...इस प्लेन में रॉकेट और 'मिसाइलें' भी फिट हैं। जो आग की गर्मी से कभी भी फट सकती हैं।
इसीलिए इसकी दिशा बदलने के साथ-साथ, इसकी आग भी बुझानी जरूरी है...
... वर्ना विस्फोट से न प्लेन बचेगा और न ही मैं! साथ ही साथ विस्फोट से प्लेन के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे।...
...जो आबादी वाले क्षेत्रों पर गिरकर भीषण तबाही मचा देंगे।...
...इस आग को बुझाने के लिए यह सूरजकुंड झील सबसे बढ़िया जगह लग रही है!

कुछ ही पलों बाद परमाणु उस जलते जेट विमान के साथ, झील में घुस चुका था-
छपाक
PADDLE boat 13
लेकिन परमाणु का झील को प्रदूषित करने का कोई इरादा नहीं था। क्योंकि आग बुझाने के बाद उसने विमान को बाहर निकालकर भी रख दिया था-
अब सेना के अधिकारी आराम से इस यान की जांच कर सकते हैं, और दुर्घटना के कारणों का पता लगा सकते हैं।
अब चलूं अपनी पुलिस-ड्यूटी पर! इंस्पेक्टर विनय के रूप में।... अरे! प्रोफेसर का मैसेज आ रहा है।
प ...परमाणु तुम तुरंत मेरी लैब में आओ।
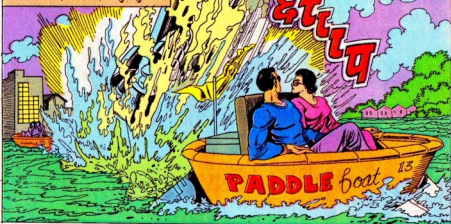
म...मैं तुमको ट्रांसमिट कर रहा हूं!
अगले ही पल परमाणु का शरीर कणों में बदलकर ट्रांसमिट होना शुरू हो गया-
प्रोफेसर ने एकाएक मुझे लैब में क्यों बुलाया है? और उनका स्वर घबराया हुआ क्यों लग रहा था!...
...खैर! अभी पता चल जाएगा कि मामला क्या है?
ट्रांसमिट होकर लैब पहुंचने में परमाणु को पलभर का समय लगा-
लेकिन उस एक पल में ही शायद बहुत देर हो चुकी थी-
क्योंकि लैब का सामान चारों तरफ बिखरा पड़ा था-
यह क्या? लैब की यह हालत किसने कर दी? और प्रोफेसर कहां हैं?
प्रोफेसर! प्रोफेसर!
आप कहां हैं?
हैप्पी बर्थडे, विनय!
प्रोफेसर!

ओह! आपने मुझे जन्मदिन की बधाई देने को बुलाया था! यह तो मुझे भी याद नहीं था कि आज मेरा बर्थडे है।
लेकिन वह घबराई आवाज ? और लैब का बिखरा हुआ यह सामान ?
जीते रहो!
यह बिखरा सामान तो इसलिए है। क्योंकि मैं लैब की सफाई करके कूड़ा-कबाड़ बाहर फेंक रहा था!
और वह घबराई आवाज इसलिए थी, क्योंकि कभी-कभी तुमको चिन्ता करवा के बड़ा मजा आता है। इससे पता चलता रहता है कि तुम मेरी कितनी फिक्र करते हो!
आपकी यह चेक करके देखने की जरूरत नहीं है। वक्त आया तो पूरी दुनिया देखेगी कि विनय अपने मामा के लिए जान भी दे सकता है।
मुझे तुम्हारी जान की जरूरत अवश्य है विनय! लेकिन सही-सलामत रूप में! ताकि मानवता की रक्षा करने में तुम मेरी मदद कर सको! तुम्हारी इस वर्षगांठ की मैं महीनों से तैयारी कर रहा था!
और आज वह तैयारी पूरी हो गई है। उस तैयारी का एक नतीजा तो तुमको वक्त आने पर पता चलेगा, लेकिन दूसरा नतीजा, तोहफे के रूप में इस डिब्बे में बन्द है।
क्या है इस डिब्बे में!?
खोलकर देख लो!
खुद ही पता चल जाएगा!
लेकिन इससे पहले कि विनय उस डिब्बे पर बंधा रिबन खोल पाता-
डेंजर! डेंजर! कृपया स्क्रीन ऑन करें!
CHANNEL 21
ओह! 'सेटेलाइट रिसपांडर के इक्कीस नम्बर कैमरा चेनल पर कुछ गड़बड़ हो रही है।
यह कैमरा चेनल 'इंडिया गेट' के एरिया पर फोकस किया हुआ है!...

स्क्रीन ऑन करते ही दोनों की ही आंखें फैल गईं—
हे भगवान! यह कैसी मुसीबत है?
कोई अजीबो-गरीब मानव लगता है। इसका शरीर किसी रोशनी से चमक रहा है! और इसके छूते ही वह पोल भी गायब हो रहा है!
इसके अन्दर कुछ अजीबो-गरीब शक्तियां हैं! और वे शक्तियां क्या हैं, उनका पता तभी चल सकता है, जब मैं इससे भिड़ने खुद जाऊं!
आपका गिफ्ट पैक मैं बाद में आकर खोलता हूं, प्रोफेसर!
परमाणु इंडिया गेट की तरफ लहरा गया—
जहां उसका सामना एक ऐसे दुश्मन से होने जा रहा था, जो अब मानव रह ही नहीं गया था—
तड़ंतड़ं
तड़ं तड़ं तड़
इसकी हिम्मत तो देखो! 'हाई सिक्योरिटी जोन' में आकर तबाही मचा रहा है!
यह इसकी पहली और आखिरी तबाही है! क्योंकि अब यह खुद तबाह होने जा रहा है!

लेकिन-
अरे, हमारी गोलियां इसके शरीर से टकराकर कहां गायब होती जा रही हैं?
गायब नहीं हो रही हैं, कमांडोज! बल्कि अणुओं में विखंडित हो रही हैं।...
फट्टाक
... और उन अणुओं के अलग होने से पैदा हुई 'बंधन ऊर्जा' को मेरा शरीर तेजी से सोख रहा है।...
...मतलब समझा कि नहीं? मतलब यह है कि तेरी गोलियां मुझे नुकसान पहुंचाने के बजाये मेरी शक्ति को बढ़ा रही हैं!
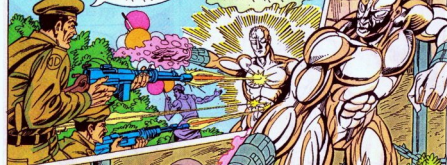
यह दृश्य देखने के बाद कमांडोज के लिए वहां रुकने का कोई मतलब भी नहीं था-
और हिम्मत भी नहीं थी-
भागो! हम इससे अकेले नहीं निपट सकते! बैकअप यूनिट के आने तक यहां से भाग लो!
तुम लोगों को मैं रोकूंगा नहीं! क्योंकि तुम मच्छर सिर्फ मेरे काम में व्यवधान पैदा कर रहे हो! तुमसे मेरी कोई दुश्मनी नहीं है!...
...मुझे तो सिर्फ परमाणु का इन्तजार है! और देर से आने की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी उसे!...
...उसके यहां आने तक, भारत का गौरव इंडिया गेट यहां पर नहीं रहेगा!...
...क्योंकि विखंडी कुछ ही पलों में इसके अणुओं को विखंडित कर देगा!
यह सिर्फ हमारा गौरव नहीं, हमारी इज्जत भी है, विखंडी!...
...और भारत की लाज पर परमाणु के रहते अगर कोई हाथ डाल जाए तो थू है परमाणु के जिन्दा रहने पर!

तबाही तो मैं मचाऊंगा ही! और तब तुझे अपने जिंदा होने पर बड़ी शर्म आएगी!
इसीलिए मैं तुझे शर्मिंदा नहीं होने दूंगा! तुझे इस जिन्दगी से निजात दिला दूंगा!
ओह! इसके संपर्क में आने से लोहे की चेन भी वैसे ही गायब हो रही है, जैसे मैंने वह पोल गायब होता देखा था!...
...यानी अगर मैंने इस पर शारीरिक प्रहार किया तो मेरा शरीर भी विखंडित हो सकता है!...
...लेकिन मैं परमाणु हूं! अपने शरीर को कणों में बदलकर जोड़ भी सकता हूं! उम्मीद करता हूं कि इसे स्पर्श करने के बाद विखंडित होने पर मैं फिर कणों को जोड़ पाऊंगा!
विचारों की आंधी, अगर परमाणु के दिमाग को झकझोर रही थी-
तो (रीको) उर्फ विखंडी का मस्तिष्क भी शान्त नहीं बैठा हुआ था-
आह! मुझे परमाणु के शरीर को विखंडित नहीं करना चाहिए!...
धाड़
...क्योंकि अगर मैं ऐसा करने में सफल हो गया, तो परमाणु की सारी 'परमाणु शक्ति' एकसाथ मुझमें समा जाएगी!
और मैं बम की तरह फट जाऊंगा! फिलहाल मेरा तुरंत मरने का इरादा नहीं है!

परमाणु के वार के असर ने, परमाणु के उत्साह को दोगुना कर दिया था–
मैं इसकी ऊर्जा- धीरे- धीरे सोख कर इसे इतना कमजोर बना दूंगा कि यह वैसे ही प्राण त्याग देगा! लेकिन अगर यह योजना सफल न हुई तो फिर परमाणु के साथ-साथ इस पूरे इलाके को नष्ट करने के अलावा और कोई चारा नहीं बचेगा!
इसने मुझे विखंडित करने की कोशिश नहीं की! यानी मुझे विखंडित करने से इसको जरूर कुछ नुकसान पहुंच सकता है!
और अब अपनी इसी कमजोरी के कारण यह मेरे हाथों से...
...मात खाएगा

कड़ाऽऽक
धम्म
छपाक
ओह! इतनी जोर का वार तो मैंने कभी नहीं खाया!
कभी नहीं!
यह खिवंडी तो गजब का शक्तिशाली है!
शुक्र है कि मेरी बेल्ट, पानी में डूबने से बच गई, वर्ना... ओह!
तू भी कम शक्तिशाली नहीं है, परमाणु! वर्ना आम आदमी का शरीर तो ऐसे वार से फट कर चिथड़े-चिथड़े हो जाता!

आह! इसके वार करते ही पानी में जैसे आग लग गई। अपनी फायर प्रूफ पोशाक के बावजूद भी मुझे तेज गर्मी महसूस हुई। और...और तालाब का चार फुट गहरा पानी कुछ ही सेकंडों में सूखकर उड़ गया। भाप के बादल छा गए हैं। अच्छा हुआ!
क्योंकि इस भाप की धुंध के बीच में यह न तो मुझे अपनी तरफ आते देख पाएगा...

...और न ही अपने आपको वार खाने से बचा पाएगा!
परमाणु का वार, विखंडी के शरीर से टकराया—

आऽऽ

और दोनों की चीखें लगभग एक साथ, उनके गले से उबलीं—
आह!
इसके शरीर से टकराते ही मेरे हाथ के अणु विखंडित होने लगे थे। और उनकी बंधन ऊर्जा खिंचने लगी थी। बड़ी मुश्किल से मैं उनको वापस जोड़ पाया हूं!

इसको शरीर से स्पर्श करना, मुसीबत की दावत देना है!...
लेकिन अगर इसको हाथों से नहीं, तो इस खंभे से तो छुआ भी जा सकता है!...
और लिटाया भी जा सकता है!
तड़ाक
आऽऽऽ ह! बहुत खेल हो गया, परमाणु! अब मैं तुझको नष्ट करके ही रहूंगा!
और याद रखना! अगर तूने मुझसे बचकर भागने की कोशिश की...
...तो फिर तेरे इंडियागेट की मैं अणुओं में तब्दील कर दूंगा!
तू जितने वार करना चाहता है, कर ले विखंडी!
लेकिन तेरे वार...
...असर तभी दिखा पाएंगे...
...जब ये मुझ तक...
...पहुंच पाएंगे!
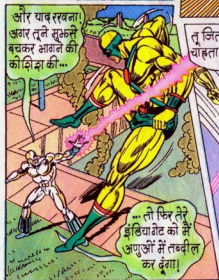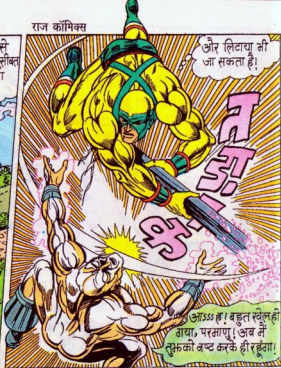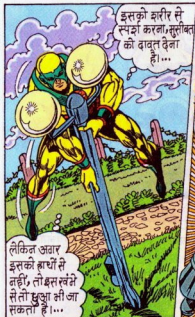
बचने के चक्कर में तू अपनी वह शक्ति व्यर्थ कर रहा है, जिसकी मुझे जरूरत है।...
...इसलिए मैं अब ऐसा वार करूंगा, जो तुझे यह बरबादी करने से रोक देगा!
विरवंडी के दोनों हाथों से किरणें एक साथ निकल कर आपस में टकराईं—
और उससे सूर्य जैसा ऊर्जा का एक गोला उत्पन्न हो गया—
जिससे किरणें निकल चारों तरफ एक साथ फैलने लगीं—
ओह! बचने के लिए कोई जगह बची ही नहीं है। अब तो...
...यह वार मुझे लगकर ही रहेगा!
आऽऽऽऽऽऽऽह!
परमाणु को ऐसा लगा, मानो सैकड़ों घोड़ों ने उसे एक साथ दुलत्ती मारी हो—
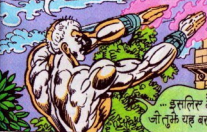
अब तक घटनास्थल पर पुलिस की स्पेशल बैकअप यूनिट के साथ-साथ भीड़ भी जमा हो गई थी–

ओह! परमाणु कमजोर पड़ रहा है! हमको उसकी मदद करनी चाहिए!

धम्मम्मम्मम्म

परमाणु हिम्मत बटोरकर खड़ा तो हो गया था–
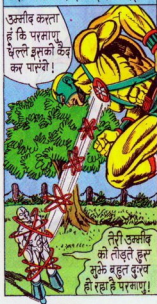
... लेकिन इस विशाल किरण को मैं अपनी किरणों से नहीं रोक पाऊंगा! लेकिन चूंकि पहले की तरह किरणें इस बार चारों तरफ नहीं फैल रही हैं, तो मैं किसी सुरक्षित स्थान पर ट्रांसमिट हो सकता हूं! ...
... और वह सुरक्षित स्थान 'विखंडी' के पीछे से ज्यादा अच्छा हो ही नहीं सकता!
आऽऽऽ ह!
ओह! तो अब तू अपनी 'ट्रांसमिट पॉवर' का इस्तेमाल कर रहा है!...
...चीटिंग कर रहा है!
आइन्दा तूने इसका प्रयोग किया तो अगला वार तुझ पर नहीं, इंडिया गेट पर होगा!
अब बिना 'ट्रांसमिट पॉवर' का प्रयोग किए मेरे वार से बचकर दिखा तो जानूं!
तेरे इस पिद्दी वार से बचने के लिए मुझे हिलने की भी जरूरत नहीं है! इसको तो मेरी परमाणु किरणें ही रोक लेंगी विखंडी!

परमाणु किरणें, विरवंडी की किरणों से टकराई, और ऊर्जा की लहरें चारों तरफ फैलने लगी-
परमाणु से मैं जीत नहीं पा रहा हूं। अब अपने शरीर को बम में बदलने के सिवाय और कोई चारा नहीं है।
और परमाणु की उसकी परमाणु किरण फेंकने पर इसतरह से मजबूर करना इस योजना का पहला कदम है।
क्योंकि अब मैं अपनी किरण को एकाएक बन्द कर दूंगा, और परमाणु किरण मेरे शरीर से आकर टकराएगी। आऽऽऽऽऽऽऽह! लेकिन अब मैं इसकी ऊर्जा को इतनी तेजी से सोखना शुरू कर दूंगा कि यह परमाणु किरण को रोक नहीं पाएगा।
परमाणु चौंक उठा-
अरे! यह क्या? यह तेजी से मेरी ऊर्जा को सोख रहा है। और ऊर्जा क्षीण होने के कारण मुझ पर कमजोरी हावी हो रही है।
परमाणु को अपनी किरण बन्द करने में कुछ ही पल का समय लगा, लेकिन उन कुछ पलों में ही उसकी नब्बे प्रतिशत ऊर्जा खिंच चुकी थी-
ओह! इसका शरीर तो बहुत तेज रोशनी छोड़ रहा है!

ये रोशनी नहीं, रेडिएशन की किरणें हैं परमाणु! मेरा शरीर इतनी ऊर्जा सोख चुका है कि अब यह एक चलता-फिरता परमाणु बम बन गया है।... मेरे शरीर में 'चेन-रिएक्शन' शुरू हो चुका है।... यह रेडिएशन किरणें उसी रिएक्शन के कारण हैं!... ...अब दस पलों में मेरा शरीर बम की तरह फट पड़ेगा!... ...और आस-पास पांच किलो-मीटर दायरे का इलाका नष्ट होकर समतल ही जाएगा!

यह क्या कह रहा है, मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा! मैं तो यह भी जानता नहीं कि इसका बाप कौन था?

मैं तो सिर्फ इतना जानता हूं कि इस इलाके में राष्ट्रपति भवन, संसद भवन और कई मुख्य सरकारी इमारतें हैं। अगर वे नष्ट हो गईं तो हिन्दुस्तान की शान नष्ट हो जाएगी। पर मैं इसको फटने से कैसे रोक सकता हूं?

ओह! समझ गया! मैं गलत लीक पर सोच रहा था। मैं इसको फटने से तो रोक नहीं सकता, पर यहां 'फटने' से जरूर रोक सकता हूं। अपनी बेल्ट की मदद से!

कुछ ही पलों में पृथ्वी की सतह से कई किलोमीटर ऊपर पहुंच चुका था। और साथ ही साथ विरवंडी के शरीर में हो रही 'नाभिकीय प्रतिक्रिया' भी चरम बिन्दु पर पहुंच चुकी थी-
और फिर- एक धमाके के साथ विरवंडी का शरीर चिथड़े-चिथड़े हो गया-
लेकिन यहां पर वह धमाका किसी को नुकसान नहीं पहुंचा सकता था-
धड़ामममम
एक ऊंची इमारत से यह दृश्य देख रहा सर्जन, बौखला उठा-
यह... यह क्या? परमाणु ने तो तुम्हारे विरवंडी को अंतरिक्ष में भेज दिया! और हम इस सुरक्षित दूरी पर खड़े होकर तमाशा देखते रहे। तुम्हारा प्लान असफल रहा, वायरस!
इतने चिन्तित मत हो सर्जन! अभी हमला पूरा नहीं हुआ है। विरवंडी के संपर्क में आने से मेरे विषाणु, परमाणु के शरीर के अन्दर अवश्य चले गए होंगे!
उन विषाणुओं का नाभिकीय असर खत्म हो गया होगा। लेकिन वे परमाणु के खून में पहुंचते ही तेजी से बढ़ेंगे! और परमाणु के रक्त संचार में बाधा डालने लगेंगे, और फिर ये इतने बढ़ जाएंगे कि रक्त संचार को पूरी तरह से ठप्प कर देंगे!
और वे विषाणु किसी भी टेस्ट में पकड़े नहीं जा सकेंगे!

परमाणु, उस विषाणु का पहला असर महसूस कर रहा था-
आह! स्कारस्क मेरी आंखों के आगे अंधेरा छा रहा है। और मैं ट्रांसमिट होकर प्रोफेसर के पास भी पहुंच नहीं सकता! क्योंकि मेरी बेल्ट विखंडी के साथ ही नष्ट हो चुकी है।
परमाणु! कमाल कर दिया तुमने! आखिरी समय में तुमने ऐसी चाल चली कि विखंडी कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचा पाया।
परमाणु के कान तक अपनी प्रशंसाओं के शब्द नहीं पहुंच पा रहे थे-
कुछ समझ में नहीं आ रहा है! मैंने शायद जरूरत से ज्यादा ऊर्जा खर्च कर दी है। वरना दिमाग बेहोशी के सागर में न डूब रहा होता!
परमाणु! क्या हो रहा है तुमको?
कुछ गड़बड़ लगती है! तुरन्त एंबुलेंस बुलाओ!
कहीं पर स्कीम के सफल होने पर होठों पर मुस्कान खेल रही थी-
गुडबॉय, परमाणु!
नर्क तक का सफर मुबारक हो!
तो किसी के माथे पर चिन्ता की लकीरें, आने वाले अनिष्ट की आशंका को दर्शा रही थीं-
परमाणु स्कारस्क बेहोश क्यों हो गया? बिना बेल्ट के मैं उसे ट्रांसमिट नहीं कर सकता। मुझे ही उसके पास जाना होगा!
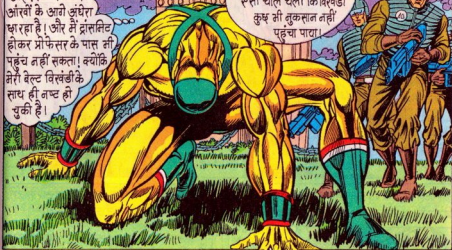
और इसी वक्त कोई और भी दिल्ली में घटे, इस ताजे घटनाक्रम से वाकिफ हो रहा था–
... और फिर परमाणु न जाने क्यों बेहोश होकर गिर पड़ा! उसको अभी-अभी एंबुलेंस में हॉस्पीटल ले जाया गया है।...
... भारती कम्युनिकेशंस के दिल्ली ब्यूरो चीफ होने के नाते मैंने इस पर एक रिपोर्ट तैयार भी कर ली है!
ठीक है, रंजन! रिपोर्ट तो मैं बाद में देखूंगा! पहले मुझे लेकर हॉस्पीटल चलो!
ओ.के. सर! चलिए!
हॉस्पीटल की तरफ बढ़ते नागराज के दिमाग में कई सवाल उभर और डूब रहे थे–
चक्कर क्या है? मुझ पर हमला अगर परमाणु ने करवाया था, तो परमाणु पर हमला किसने करवाया?
परमाणु का बचना बहुत जरूरी है! वरना रहस्यों पर से पर्दे कभी उठ नहीं पाएंगे!
अस्पताल में परमाणु के शुभचिन्तकों और रिपोर्टरों की भीड़, बड़ी तादाद में जमा हो गई थी–
वे महान वैज्ञानिक वर्मा जी हैं! विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि परमाणु की शक्तियां इनके विज्ञान की ही देन हैं!
आइए, सर! इनसे ही कुछ पूछा जाए! वरना डॉक्टर तो किसी को भी परमाणु के रूम के आस-पास फटकने तक नहीं दे रहे हैं!
सर! वर्मा सर! एक मिनट!
कौन हैं आप लोग? मुझसे क्या चाहते हैं?
सर! हम लोग भारती कम्युनिकेशन्स से आए हैं। आपसे दो-चार सवाल पूछने...
ADMISSION

ओफ़! तुम रिपोर्टरों ने सिर्फ एक घंटे में ही मेरा जीना मुश्किल कर दिया है!
किसी की मुसीबत को तमाशा और धंधा बना लेते हो तुम लोग!
सर! म... मैं तो...
एक मिनट, रंजन! मैं बात करता हूं।

हम एक जिम्मेदार चैनेल के कर्मचारी हैं मिस्टर वर्मा! मैं राज हूं। भारती कम्युनिकेशंस का जन सम्पर्क अधिकारी।...
... परमाणु के प्रशंसक सिर्फ दिल्ली में ही नहीं, पूरे हिन्दुस्तान में हैं। या कहिए कि पूरे विश्व में हैं।...

... वे सब परमाणु की कुशलता जानने के लिए चिन्तित हैं। हमारा चैनेल उन सब के दिलों को धीरज बंधा सकता है! सच पूछिए तो मैं भी महानगर से दिल्ली सिर्फ परमाणु से मिलने ही आया था।
नागराज के आवाज की दृढ़ता और उसके शब्दों की सच्चाई ने मिस्टर वर्मा को शर्मिन्दा कर दिया–
आ... आई एम सॉरी मिस्टर राज! दरअसल आज परमाणु का जन्मदिन है। और आज ही के दिन वह मौत के पास पहुंच गया है।...
... उसके शरीर के रक्त संचार में रुकावट आ रही है, और डॉक्टर सैकड़ों टेस्टों के बाद भी कारण का पता नहीं लगा पा रहे हैं।...
... हर पल रक्त संचार हल्का होता जा रहा है। आधे घंटे के अन्दर उसके मस्तिष्क तक खून पहुंचना बन्द हो जाएगा। और परमाणु... ओफ़! मैंने अपने आपको इतना असहाय कभी महसूस नहीं किया।
मैं परमाणु को एक नजर देखना चाहता हूं मिस्टर वर्मा! क्या आप मुझे उस तक ले चल सकते हैं?
मैं... डॉक्टरों ने मना... ओह! जाने दो! न जाने क्यों मुझे लग रहा है कि तुम्हारे देखने से शायद परमाणु का भला हो सके।...
... चलो, मैं तुमको परमाणु तक लिए चलता हूं। आओ!

परमाणु सचमुच मर रहा था। उसकी हृदय गति को नापने वाला मीटर हर पल कम होती जा रही हृदय गति दर्शा रहा था-
ये देखो! देखो! परमाणु की हालत! दुनिया की जान बचाते-बचाते अपनी जान गंवाने जा रहा है!
एक मिनट, मिस्टर वर्मा! शांत रहिए! मुझे देखने दीजिए!
परमाणु की यह हालत उसके रक्त संचार में रुकावट आने के कारण है। यह तो स्पष्ट है कि कोई वस्तु इसमें रुकावट डाल रही है।...
...और वह वस्तु क्या है, यह मेरा सर्प नागेन्द्र पता कर सकता है!
नागराज की कलाई से नागेन्द्र, सूक्ष्म रूप में निकलकर परमाणु के रोम छिद्रों से होता हुआ उसकी रक्त वाहिनी में प्रवेश कर गया-
और कुछ ही पलों बाद, नागराज को नागेन्द्र का मानस सन्देश आने लगा-
नागराज, इस मानव की रक्त नलिकाओं में स्थान-स्थान पर एक विचित्र विषाणुओं का जमाव है। वे ही इसके रक्त संचार को अवरुद्ध कर रहे हैं। और इसकी प्रतिरोधक कोशिकाएं मुकाबला नहीं कर पा रही हैं। पर हम सूक्ष्म सर्प इनको नष्ट कर सकते हैं!
ठीक है! मैं इसके शरीर में सूक्ष्म सर्पों की सेना को प्रविष्ट करा रहा हूं! इस सेना का नेतृत्व तुम करोगे! नष्ट कर दो इन विषाणुओं को!

सूक्ष्म सर्प, परमाणु की रक्त नलिकाओं में जमा विषाणुओं के समूह पर टूट पड़े। और विषाणु धीरे- धीरे नष्ट होने लगे-

और परमाणु का रक्त संचार सामान्य होने लगा। दिल की धड़कन भी धीरे- धीरे बढ़कर सामान्य स्तर पर आने लगी-
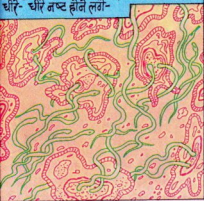
55

लेकिन परमाणु की हालत में यह चमत्कारिक सुधार नागराज के 'गुप्तरूप' राज के लिए खतरा भी बन सकता था-

इसीलिए नागराज ने प्रोफेसर वर्मा को यह चमत्कार नहीं देखने दिया-

चिन्ता की कोई बात नहीं है, प्रोफेसर वर्मा! मुझे पूरा विश्वास है कि अब परमाणु की जान को कोई खतरा नहीं होगा... चलिए, अब हम परमाणु को आराम करने देते हैं!

पता नहीं क्यों तुम्हारी बात पर मुझे यकीन होता जा रहा है। मुझे तसल्ली हो गई है! अब मैं अपनी लैब में जाकर कुछ जरूरी काम कर सकता हूं!

तो फिर परमाणु के होश में आने से पहले उसकी शक्ति को एक-चौथाई कर देते हैं। उसके मार्गदर्शक और उसकी शक्तियों के स्रोत इस प्रोफेसर वर्मा को इस दुनिया से उठाकर!

पहले यह कोई नहीं जानता था कि परमाणु को इसी ने बनाया है। लेकिन परमाणु के मरणासन्न होने पर हॉस्पिटल भागकर आने से इसका यह राज खुल गया है! इसको मार दो तो परमाणु अपने आप ही शक्तिहीन हो जाएगा!

ICINE

PARKIN

ठीक कह रहे हो तुम? मैं इसका पीछा करके तुमको खबर भेजता हूं कि यह कहां जा रहा है?

और तुम इसको परलोक का रास्ता दिखाने वाला कोई गाइड भेजने की तैयारी करो!

लेकिन नंबर दबाने के लिए उनकी ऊंगलियां हिल नहीं पाईं-
क...कौन हो तुम?
कड़ाक
मैं ऑपरेटर हूं प्रोफेसर!
लोगों के ऑपरेशन करके उनके शरीर में कैद आत्माओं को आजाद करता हूं मैं! आज तेरे ऑपरेशन की तारीख है!
ओह! परमाणु के लिए बेचैनी दिखाकर अस्पताल जाने से मेरा परमाणु से संबंध जग जाहिर हो गया है। और अब परमाणु के दुश्मन मेरे जरिए परमाणु से बदला लेने के लिए मुझ पर हमला कर रहे हैं। ये झिलमिल कतरने मैं लाया तो था गुब्बारों में भरने के लिए! पर अब ये इसको अंधा करने के काम में आएंगी।
आह
फूऊऊऊ
और मैं लिफ्ट के जरिए अपनी लैब की तरफ भाग लूंगा!
एक तो यह ऑपरेटर लैब तक पहुंच ही नहीं पाएगा! और अगर पहुंच गया तो यहां पर उससे निपटने के लिए काफी समय मिल जाएगा!
इधर प्रोफेसर की जान एक कच्चे सूत के धागे में लटकी हुई थी-

और दूसरी तरफ नागराज, प्रोफेसर से मिलने के लिए दिल्ली के आकाश पर लहरा चुका था-
प्रोफेसर के द्वारा दिए गए पते को मैंने चेक किया था! उनके घर तक पहुंचने में मुझे पांच मिनट से ज्यादा वक्त नहीं लगेगा!
अरे! यह तो नागराज है! नागराज दिल्ली में क्या कर रहा है?
सान्नू दर्शन देण वास्ते आया होन्ना! हौर की?
और इधर प्रोफेसर की पहली उम्मीद को 'ऑपरेटर' ने तोड़ दिया था! वह लिफ्ट की छत तक पहुंच चुका था-
हर मरीज ऑपरेशन होने से पहले ऐसे ही घबराता है प्रोफेसर!
खच
खचरख
लेकिन उनका ऑपरेशन तो करना पड़ता ही है! अब देख! इस आरी का इस्तेमाल! टूटी हड्डी वाले मरीजों की हड्डी तक पहुंचने के लिए किया जाता है!
धम्म
लेकिन मैं पहले तेरी हड्डी तक पहुंचूंगा, और फिर तेरी हड्डी को तोड़ूंगा!
प्रोफेसर की धमकी खोखली नहीं थी- स्टिंग-रे के वार ने ऑपरेटर को घुटनों पर ला पटका-
हड्डी तोड़ेगा तो तब, जब मुझ तक पहुंच पाएगा! उससे पहले मेरी 'स्टिंग-रे' तुझको दया की भीख मांगने पर मजबूर कर देगी!
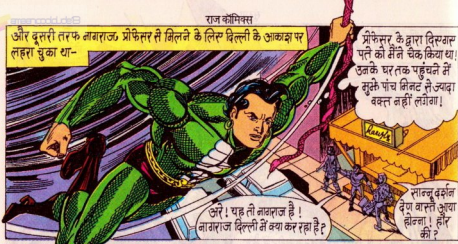
इस 'स्टिंगरे' का स्वाद तो तूने चख ही लिया, आपरेटर! अब जरा 'बुलडोजररे' का असर भी देख ले!
ऑपरेटर जब तक अपने झनझनाते शरीर की जरा सा भी संभाल पाता-
आआह!
'बुलडोजररे' ने उसे दीवार से जा चिपकाया-
आह! मैं हिल भी नहीं पा रहा हूं! कैसी है यह किरण?
प्रोफेसर की इस किरण को अगर मैं बन्द नहीं कर सका तो सर्जन मेरे दिल की धकधकी बन्द कर देगा! पर मैं इस किरण को बन्द करूं तो कैसे? आहा!
प्रोफेसर मूर्खता कर गया! इसने मुझे उन केबलों के पास चिपका दिया, जो मशीनों को पावर सप्लाई कर रहे हैं!
अब तू दीवार से ऐसे ही चिपका रह! और मैं पुलिस को फोन करके बुलाता हूं!
इस 'बुलडोजर-रे' के जोरदार धक्के के बावजूद भी मैं आरी को इतना जरूर हिला सकता हूं...
... कि वह इन तारों को काट दे!...
...मशीनों की बिजली मिलनी बन्द हो जाए-
किर्र्र्र्

...और मैं आजाद हो जाऊं!
मशीन को बिजली मिलनी बन्द होते ही बुलडोजर-किरण भी बन्द हो गई-
लेकिन प्रोफेसर को इस बात का एहसास थोड़ी देर से हुआ-
खचाक
अब मैं तुझ पर यह 'एनेस्थेटिक स्प्रे' छोड़ूंगा! यह तेरी हृदय गति को बन्द कर देगा, और तेरा राम-नाम सत्य हो जाएगा!...
प्रोफेसर का तो मैं राम-नाम सत्य नहीं होने दूंगा! पर तेरे बारे में मैं कुछ कह नहीं सकता!
तड़ाऽऽ
आऽऽह!
नागराज! तू यहां पर कैसे आ गया?
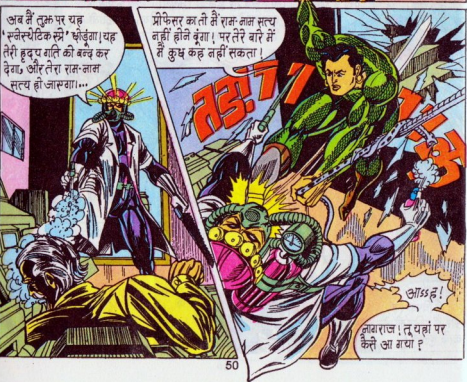
तू मेरा नाम भी जानता है, और मुझे देखते ही पहचान भी गया!
कमाल है! लगता है, मैं काफी फेमस हूं!
आऽऽऽह! फेमस तो तू है ही नागराज!
ताड़
और नागराज की आंखों के आगे कई फ्लैश लाइटें एक साथ चमक उठीं-
लेकिन तुझे पहचान मैं इसलिए गया, क्योंकि बॉस को तेरे दिल्ली आने की पूरी उम्मीद थी!
और उन्होंने तेरी तस्वीर सबको दिखा दी थी! अब उसी फोटो के साथ तेरे मरने की खबर कल के अखबार में छपेगी!
आह ह!
मेरी आंखें!
मैं कुछ देख नहीं पा रहा...
...हूं! देख तेरी बात मैंने पूरी कर दी! अब जब तक तू देखने काबिल ही पाएगा, तब तक मैं तेरी आंखों के परमानेंट बन्द होने का इन्तजाम कर दूंगा!
ताड़
ऑपरेटर की ऊंगली, एक बटन पर दबी-

आंख के आगे अभी भी अंधेरा छाया हुआ है।... मैं जब यहां प्रोफेसर से मिलने पहुंचा था, तो यहां कोई नहीं था। थोड़ा सा ढूंढ़ने पर लिफ्ट का दरवाजा खुला मिल गया और मैं यहां पर आ गया।... और एकदम ठीक टाइम पर पहुंचा।...
... लेकिन इसने अभी कहा था कि बॉस ने इसको मेरी फोटो दिखाई थी। इसका भी वही बॉस होना चाहिए जो 'ड्रेगन फ्लाई' का था! क्योंकि इनकी मेरे दिल्ली पहुंचने का पहले से ही उम्मीद थी। और वह बॉस परमाणु हो ही नहीं सकता!
क्योंकि परमाणु प्रोफेसर पर हमला कभी करा ही नहीं सकता! इससे मुझे इसके बॉस का पता चल सकता है। और तब इस षडयंत्र का रहस्य खुल जाएगा!...
... मैं इसको साफ-साफ नहीं देख पा रहा हूं। पर मेरे सर्प इसे देख सकते हैं!
सांप छोड़ने पर उतर आया, नागराज! छोड़, जितने छोड़ सकता है, छोड़!
मेरा स्पेशल 'एनेस्थेटिक स्प्रे' इनको पलभर में ही बेहोशी की दुनिया में पहुंचा देगा!
फिस्सस
और अब मैं तुझे दिखाऊंगा, अपनी कला! कभी मैं एक कुशल सर्जन था। पर एक गलत ऑपरेशन के कारण मेरा डॉक्टरी लाइसेंस कैंसल कर दिया गया। लेकिन मुझे अब भी मानव शरीर की गहरी जानकारी है! मैं जानता हूं कि कौन सी नस काटने से शरीर के किस हिस्से में खून का दौरान रुक जाता है!
आऽऽऽह!
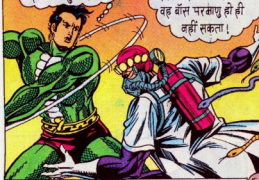
ओह! यह इस नाजुक चाकू से कुशल वारों के द्वारा मेरी नसों को काट रहा है। मेरे सर्प इस क्षति को जल्दी ही ठीक कर देंगे। लेकिन उन कुछ पलों तक मुझे सुन्न हाथों से ही काम चलाना पड़ेगा!
खशाक
और उधर परमाणु, अपने बिस्तर से उठकर खड़ा ही गया था–
मुझे क्या हुआ था, डॉक्टर? और आपने मुझे ठीक कैसे किया?
हमने कुछ नहीं किया परमाणु! क्योंकि हमको पता ही नहीं था कि तुम्हारा रक्त संचार अवरुद्ध क्यों है!
लेकिन जब तुम ठीक ही रहे थे, तो हमने तुम्हारे खून का एक सैम्पल लिया था। जांच के लिए! और उसमें हमको यह मिला है!
यह तो छोटे-छोटे कीड़े लग रहे हैं। सांप जैसे!
इधर नागराज का खून, फर्श पर टपक रहा था–
ये छोटे-छोटे सांप ही हैं परमाणु! पक्की तौर पर तो नहीं कह सकता! पर शायद ये ही तुम्हारे रक्त संचार को अवरुद्ध कर रहे थे!
सूक्ष्म सर्प! मेरे शरीर में! ये तो सिर्फ नागराज के शरीर में ही होते हैं। और मेरे शरीर में उनको सिर्फ नागराज ही पहुंचा सकता है। पर वह मेरे पास आया कब?…
…और मुझे मारने की कोशिश उसने करी तो… क्यों की?
परमाणु, तुम्हारे पूर्ण रूप से स्वस्थ होने का समाचार हम प्रोफेसर साहब तक काफी देर से पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं। पर न जाने क्यों, फोन इंगेज जा रहा है।
ओह! मुझे तुरन्त प्रोफेसर के पास पहुंचना होगा। कहीं मेरी तरह उन पर भी तो कोई मुसीबत नहीं आ गई है!

प्रोफेसर पर मुसीबत आई तो जरूर थी, लेकिन नागराज ने उस मुसीबत को अपने सर पर ले लिया था-
मैंने तेरे शरीर की नसों को काट-काटकर तुझे नकारा तो बना दिया है! पर तू तो बिना गर्दन काटे मरेगा नहीं! और अब भी तुझमें इतनी शक्ति तो बची ही है कि तू मुझे अपनी गर्दन काटने न दे!
लेकिन हम लोगों को तेरे बारे में विस्तार से बताया गया है। तू अत्यधिक ठंड बर्दाश्त नहीं कर पाता! और अपने ऑक्सीजन सिलेंडर से मैं तुझ पर वह अत्यधिक ठंडी हाई प्रेशर ऑक्सीजन गैस छोड़ूंगा, जो तेरे शरीर पर पड़कर, तेरे शरीर को एक ठंडी पर्त से ढक देगी! और जब तू बिलकुल बेबस हो जाएगा, तब मैं तेरा सर काटकर बॉस को तोहफे में दूंगा!
फिर्र्र स्स्स्स्स्स्स
आह! सारे शरीर के सर्प एकास्क ही सुषुप्तावस्था में चले गए हैं। शक्ति क्षीण हो रही है!
लेकिन अपना मास्क उतारकर ऑपरेटर एक गलती कर गया है!...

... क्योंकि मुझमें अब भी इतनी शक्ति बची है कि मैं इस पर अपनी विष फुंकार छोड़कर इसको बेहोश कर सकता हूं। ...
नागराज की विष फुंकार, ऑपरेटर की तरफ लपकी-
और ऑपरेटर अपने होश खोकर, नीचे आ गिरा-
फूऊऊऊ
और यही 'गिरना' ऑपरेटर के लिए अभिशाप बन गया-
क्योंकि उसका मुंह वहीं पर आकर टकराया, जहां पर नागराज का खून गिरा था-
मुंह के रास्ते खून, ऑपरेटर के शरीर के अंदर जाकर उसके खून में मिलने लगा-
नतीजा वही हुआ, जो नागराज का जहर किसी जीवित प्राणी के खून में मिल जाने से होता था-
ऑपरेटर का शरीर, मोम की तरह गलना शुरू हो गया-
ओह! यह क्या हो गया? इसने खुद ही मेरा खून बहाया, और खुद ही उसे चाटकर मर गया। खैर! जो हुआ, बुरा हुआ!
नागराज, तुरंत प्रोफेसर की तरफ मुड़ा-
ओह! इनका तो काफी खून बह गया लगता है। बेहोश हो गए हैं। मैं अभी पुलिस और एंबुलेंस को फोन करता हूं!
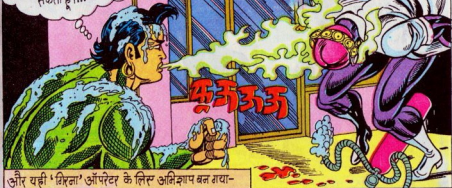
इधर नागराज, प्रोफेसर को बचाने की कोशिशें कर रहा था-
और दूसरी तरफ वायरस अपने प्रयोग में सफलता की मंजिल तक पहुंच रहा था-
आहा! बस बन गया काम! इन सांपों के जहर में कोशिका तेजी से बढ़ रही है!...
...अब मैं इन सांपों की जहर की थैली ही निकाल लेता हूं! ताकि जहर बार-बार न निकालना पड़े!
जल्दी करो! ये सांप थोड़ा-थोड़ा होश में आ रहे हैं!
सांपों ने होश की धरती पर कदम रखते ही मानसिक संकेत भेजने शुरू कर दिए-
और ये मानसिक संकेत दूर से नहीं, पास से ही आ रहे हैं! इन मानसिक संकेतों का पीछा करके मैं उस शख्स तक पहुंच सकता हूं, जिसने मेरे सांपों को न जाने किस काम के लिए मंगवाया है!
और नागराज तक मानसिक संकेतों की पहुंचने में स्कफल का भी वक्त नहीं लगा-
पुलिस और एंबुलेंस को तो मैंने बिना अपना नाम बताए इंफार्म कर दिया... अरे!...
...मेरे सर्पों के मानसिक संकेत आ रहे हैं! ये सर्प वही सर्प होंगे जो ड्रेगन फ्लाई ले गया था!...
...क्योंकि दिल्ली में और कोई सर्प तो मैंने छोड़े ही नहीं!
आकाश पर लहराने से पहले नागराज, प्रोफेसर को लैब से बाहर निकालकर ड्राइंग रूम में लिटा गया था, ताकि अनचाहे लोग प्रोफेसर की लैब तक न पहुंच सकें-

सूरमा
और इधर परमाणु, प्रोफेसर के पास पहुंच चुका था! परन्तु वहां पर एक बुरी खबर उसका इंतजार कर रही थी-
प्रोफेसर! क्या हुआ प्रोफेसर को?
इन पर जान लेवा हमला किया गया है, परमाणु! पुलिस वाले भी अन्दर हैं। उनसे जाकर तुम विस्तार से पूछताछ कर सकते हो!
बिना बेल्ट के भी परमाणु लगभग उड़ता हुआ अन्दर पहुंचा-
पुलिस वाले अन्दर हैं। कहीं उन्होंने गुप्त लैब को तो नहीं ढूंढ निकाला है?
ओह! परमाणु!
यहां पर हुआ क्या था इंस्पेक्टर? प्रोफेसर पर हमला किसने किया?
यह पता नहीं चला परमाणु! प्रोफेसर हमको यहां सोफे पर लेटे मिले थे! खून से लथपथ थे। पर पूरे घर में न तो किसी संघर्ष के निशान हैं, और न ही खून के धब्बे! सच पूछो तो हमको एक भी क्लू नहीं मिला है!
अभी तो मैं तुमको परेशान नहीं करूंगा परमाणु! पर अगर तुमको किसी पर शक हो तो मुझे खबर जरूर करना!
ओह! यानी प्रोफेसर पर हमला यहां नहीं, लैब में हुआ है? और हमलावर ने ही प्रोफेसर को उठाकर यहां लिटा दिया होगा। लेकिन लैब तक पहुंच कौन गया? और कैसे? और वह दुनिया को यह क्यों नहीं जानने देना चाहता था कि प्रोफेसर की कोई गुप्त लैब भी है!
अब मैं चलता हूं!

इंस्पेक्टर के जाते ही परमाणु लपक कर लैब के अन्दर पहुंचा-
ओह! सुबह मुझे तोड़-फोड़ होने की गलत फहमी जरूर हुई थी। लेकिन इस बार शक की कोई गुंजाइश नहीं है कि यह टूट-फूट किसी संघर्ष का परिणाम है!
यह किसी के कपड़े लगते हैं। ऑक्सीजन सिलेंडर और कुछ अन्य यंत्र हैं! पर किसी का शरीर कहीं नहीं है! सिवाय इस लिजलिजे पदार्थ के!
यह लिजलिजा पदार्थ तो प्रोफेसर पर जानलेवा हमला नहीं कर सकता! फिर क्या... अरे!
परमाणु की फर्श पर फिसलती नजर उन सांपों पर जाकर टिक गई, जो ऑपरेटर के एनस्थेटिक वार से बेहोश हो गए थे-
सांप! यहां पर भी सांप! यह भी जरूर नागराज के ही सांप होंगे! ...
... यानी प्रोफेसर पर हमला नागराज ने किया है। अब समझ में आ रहा है! वह विरवंडी भी जरूर नागराज का ही आदमी होगा। और लड़ाई के दौरान उसने किसी प्रकार से मेरे शरीर में सूक्ष्म सर्प प्रविष्ट करा दिए होंगे!
तू मेरी जिन्दगी योजनाबद्ध तरीके से तबाह करने की कोशिश कर रहा है नागराज! और इसका परिणाम तुझे भुगतना होगा, परमाणु के हाथों!

ओफ़! प्रोफेसर के बिना मैं अपने-आपको कितना असहाय महसूस कर रहा हूं! यहां के सारे यंत्र भी टूट-फूट गए हैं!...
... अब अगर मैं नागराज का पता लगाऊं भी तो कैसे? बदले की आग कैसे बुझाऊं?
आज मेरे जन्मदिन पर प्रोफेसर मुझे यह तोहफा देने वाले थे! क्या हो सकता है यह तोहफा?
खोलकर देखना चाहिए!
परमाणु, तोहफा खोलते ही चौंक उठा-
ओह! नई बेल्ट! प्रोफेसर ने मेरे लिए नई बेल्ट बनाई है!
इसकी बनावट देखकर लगता है कि इसमें प्रोफेसर ने कई नए कंट्रोल लगाए हैं!
लेकिन मुझे इसके कंट्रोल बताने वाले मामा खुद मौत से जूझ रहे हैं!...
...लेकिन मैं उनका मुंह देखने तभी जाऊंगा, जब मैं उनके हमलावर को मारकर अपना मुंह दिखाने लायक हो जाऊंगा!
इस बेल्ट का इस्तेमाल करना ही होगा! कंट्रोल का खुद पता करना होगा! अलग-अलग बटन दबा-दबा कर देखता हूं कि क्या होता है?
परमाणु कई बटन दबा गया, पर कुछ नहीं हुआ। लेकिन एक बटन दबते ही-
फर्श का एक पैनल एक तरफ सरक गया-
अरे! यह क्या? इसे तो मैंने पहले कभी नहीं देखा!
घर्र्र्र्र
परमाणु सीढ़ियों से नीचे उतर गया-
सामने एक सुरंग दिख रही है! कहां जाती है यह सुरंग?
सुरंग ज्यादा लंबी नहीं थी। दो-तीन मोड़ मुड़ने के बाद ही सामने रोशनी दिखने लगी! पर यह रोशनी बिजली की रोशनी थी-
और वह रोशनी जहां जल रही थी-

amarhoodude18
वह एक विशाल गुफानुमा कक्ष था! जिसमें बैठा हुआ शख्स था–
प्रोफेसर! आप यहां? पर आप तो...
13
'फ्यूजन चैंबर' में तुम्हारा स्वागत है, परमाणु! मैं प्रोफेसर नहीं हूं! मैं उनकी ही छवि में, उनके ही द्वारा बनाया रोबोट हूं। तुम मुझे 'प्रोबॉट' कह सकते हो! मैं बैकअप यूनिट के रूप में बनाया गया हूं। अगर प्रोफेसर को किसी कार्यवश शहर या देश से बाहर जाना पड़े या उनके साथ कुछ अनहोनी घट जाए तो उनके स्थान पर मैं उनका कार्य करूंगा! कोई शक, कोई सवाल?

प्रोफेसर आज मुझे इस नई बेल्ट की गिफ्ट में देने वाले थे। लेकिन मुझे वे इसकी खासियतें नहीं बता पाए! क्या तुम मुझे इसकी खासियतें बता सकते हो प्रोबॉट?

जरूर, परमाणु! तुम्हारी बेल्ट को हमने और शक्तिशाली बना दिया है। इसमें कुछ नई शक्तियां जुड़ी हैं, पर उन नई शक्तियों के बढ़ने के कारण कुछ शक्तियों को क्षीण भी करना पड़ा है!

क्योंकि बेल्ट में लगाई गई न्यूक्लियर बैटरियों में सीमित पॉवर है।

तुम अब भी इस बेल्ट के जरिए ट्रांसमिट हो सकते हो, परंतु स्वयं से सिर्फ एक किलोमीटर दायरे के अंदर! हां, अगर तुम मुझे सूचित करोगे तो मैं तुमको कहीं से भी ट्रांसमिट करके 'फ्यूजन चैंबर' में ला सकता हूं, बशर्ते तुम किसी स्थान पर बन्द न हो!

तुम्हारी बेल्ट का संपर्क रिमोट कंट्रोल द्वारा तुम्हारी छाती पर लगे 'एंबलम' के साथ-साथ इन नए 'ब्रेसलेटों' से भी होगा! तुम इन ब्रेसलेटों से भी वैसे ही परमाणु तरंगें छोड़ सकते हो, जैसी अपने 'एंबलम' से!

तुम्हारी इस बेल्ट में इस बार 'वायस एक्टिवेटर' भी लगा हुआ है। यानी सिर्फ तुम्हारे बोलने से कोई भी सर्किट चालू हो जाएगा!

तुम सिर्फ बोलोगे 'परमाणु तरंगें' और तरंगें छोड़ने वाला 'मोड' चालू होकर किरणें छोड़ने लगेगा। इसमें बार-बार चार्ज कर सकने वाली बैटरियां भी लगी हैं। अब तुमको चार्ज करवाने के लिए बेल्ट को लाने की जरूरत नहीं है। सिर्फ बैटरी लेने से ही काम चल जाएगा!

ओह! आश्चर्यजनक बेल्ट है ये!

इसका सबसे बड़ा आश्चर्य तो तुमने अभी सुना ही नहीं!

इस बेल्ट में एक 'मॉलिक्यूलर कॉम्पैक्टर' लगा हुआ है! उसका प्रयोग करके तुम एक 'अमीबा' यानी सूक्ष्म जीवियों के आकार तक छोटे हो सकते हो। इस बटन को दबाओ और देखो कमाल!
आश्चर्य के सागर में गोता लगा रहे परमाणु ने बेल्ट का वह बटन दबाया–
और उसका शरीर बहुत तेज गति से सिकुड़ना शुरू हो गया-
तुम जैसे-जैसे छोटे हो रहे हो...
...वैसे-वैसे तुम्हारी 'डेन्सिटी' यानी घनत्व भी बढ़ता जा रहा है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो तुम और ठोस होते जा रहे हो।...
...इस स्थिति में तुम अपनी किसी भी दूसरी शक्ति का प्रयोग नहीं कर पाओगे! सिवाय उड़ने की शक्ति के!
अब अगर तुम वापस अपने असली आकार में आना चाहते हो तो उस बटन के ठीक बगल में लगा बटन दबा दो!
कमाल है! मैं तो सोच भी नहीं सकता था कि प्रोफेसर यह भी कर सकते हैं!
यह तो स्पष्ट है कि वे ऐसा कर सकते हैं। एक बात और, छोटे होते वक्त अगर तुम किसी भी खास आकार पर रुकना चाहो तो छोटा होने वाले बटन को एक बार और दबा देना!
मैंने तुमको बेल्ट की लगभग सारी नई खासियतें बता दी हैं। अब बताओ, मैं और क्या करूं?

सिर्फ एक काम! मैं तुमको प्रोफेसर पर जानलेवा हमला करने वाले का हुलिया बताता हूं! तुम उसकी तलाश करो कि वह कहां पर है!
ताकि मैं जाकर उससे हिसाब बराबर कर सकूं! प्रोफेसर की जान के बदले में उसकी जान!
इसी वक्त- सर्जन और वायरस अपने अविष्कार की समाप्ति के मुकाम तक पहुंचा रहे थे-
बस! एक जहर की पोटली और! फिर कोशिका को इतना पोषण मिल जाएगा कि वह अपने-आप द्विगुणित होनी शुरू हो जाएगी!
ओह! ये सांप तो होश में आ रहे हैं!
घबरा मत! इन सबकी जहर की पोटली मैंने निकाल दी है। फिर भी तुझे डर लगता है तो इनको फिर से बेहोश किए देता हूं!
फिस्स्स्स्स्स
स्प्रे ने नागों को एक बार फिर बेहोशी की तरफ धकेल दिया-
और नागराज को संकेत मिलने बन्द हो गए-
यह क्या? एकाएक संकेत आने बन्द हो गए! पर संकेत काफी पास से आ रहे थे! यानी मैं मंजिल के काफी करीब हूं...
...ऐसे कुछ पता नहीं चलेगा! मैं अपने सर्पों को इस इलाके में चारों तरफ फैला देता हूं! वे जरूर अपने साथी सर्पों को, और उनके जरिए दुश्मन के अड्डे को ढूंढ़ निकालेंगे!
नागराज अपने शरीर से सर्पों को इस वक्त निकालकर एक बड़ी गलती कर रहा था-

क्योंकि सर्पों के निकल जाने से उसकी शक्ति तब तक के लिए क्षीण हो जाती थी, जब तक उसके शरीर के बचे सर्प द्विगुणित होकर उस घटी संख्या को पूरा न कर दें-
और इस वक्त नागराज का सामना जिस प्रतिद्वंदी से होने जा रहा था, उसके लिए नागराज को अपनी सम्पूर्ण शक्ति की आवश्यकता थी-
मेरे शरीर में सूक्ष्म सर्प छोड़कर, मुझे मारने की कोशिश करके और प्रोफेसर पर जानलेवा हमला करके तूने अपने- आपको मेरा दुश्मन साबित कर दिया है, नागराज! अब परमाणु तेरा वह हाल करेगा कि तेरी गिनती न तो जिन्दों में होगी और न ही मुर्दों में!
परमाणु!
तुमने मुझे प्रोफेसर का हमलावर कहा... यह सच नहीं है!...
...तुमको कोई गलतफहमी हुई है!...

मैं तुमको समझाता हूं कि वास्तव में क्या हुआ sss...
...आऽऽऽह!
धड़ाक
समझने की कोई जरूरत नहीं है, नागराज!...
...परमाणु के पास इतनी बुद्धि है!...
...कि उसने जो कुछ देखा है, उससे वह निष्कर्ष निकाल सके!...
...और वह निष्कर्ष यह है कि तूने मेरी और प्रोफेसर की जान लेने की कोशिश के साथ-साथ दिल्ली तबाह करने की भी कोशिश की है। और इसकी सजा तुझे भुगतनी ही होगी!
इधर दो पहाड़ आपस में टकराने जा रहे थे-
और इस लड़ाई से किसी को फायदा पहुंचने वाला था-
तू सच कह रहा है?
हां, डॉक्टर वायरस! मेरी आंखों देखी और कानों सुनी बात है!
वायरस! वायरस! यहां से थोड़ी दूर पर बड़ी गड़बड़ हो रही है!
एक मिनट सर्जन!
पहले इसकी बात तो सुन लो!
यह उसी अस्पताल में काम करता है, जिसमें परमाणु भर्ती था, और उस प्रोफेसर को भी उसी अस्पताल में ले जाने के लिए यही प्रोफेसर के घर भी गया था। यह बता रहा है कि परमाणु के शरीर में नागराज के सांप निकले और प्रोफेसर पर हमले के पीछे भी परमाणु को नागराज पर ही शक है!
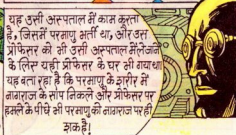
ओह! तो यही कारण होगा कि यहां से थोड़ी ही दूर पर परमाणु और नागराज में भीषण युद्ध हो रहा है!
ओह! पास में ही हैं दोनों! यानी उन दोनों में से किसी को यहां पर हमारा अड्डा होने का आभास हो गया है! खतरनाक बात है। उन दोनों के बीच में समझौता नहीं होना चाहिए। लड़ाई और बढ़नी चाहिए!
पर हम उसकी लड़ाई को कैसे बढ़ा सकते हैं?
हम नहीं बढ़ा सकते, पर यह वायरस बढ़ा सकता है! वे दोनों आश्चर्यजनक शक्तियों से युक्त जरूर हैं! पर हैं तो इन्सान ही न?
यह वायरस किसी भी इन्सान के दिमाग के क्रोध वाले हिस्से पर हमला करता है! इन्सान को तेज गुस्सा आता है, और उसके सोचने-समझने की शक्ति गुम हो जाती है!
तू इस कैन को उनके लड़ने के स्थान के पास जाकर छोड़ देना! गर्मी से यह अपने-आप फट जाएगी, और वायरस वहां के वातावरण में छा जाएगा!
परमाणु और नागराज की लड़ाई जारी थी–
रुक जाओ, परमाणु! मैं भी तुम्हारी तरह गलत फहमी का शिकार होकर दिल्ली आया था... पर मैंने तुमको या प्रोफेसर को मारने की नहीं, बल्कि बचाने की कोशिश की थी!
ओह! सचमुच?
पर ऐसा तुमने कैसे किया?
और क्यों किया?

दरअसल महानगर में मेरा सामना 'ड्रेगन फ्लाई' नाम के एक अजीबो-गरीब प्राणी से हुआ!...
...पकड़े जाने पर उसने अपने मालिक का नाम परमाणु बताया!...
...मैं यह जानने को दिल्ली चला आया कि तुमने आखिर मुझ पर हमला क्यों करवाया...
कड़ाक
...जब मैं दिल्ली पहुंचा तो मुझे पता चला कि तुम कोमा में हो, और मौत से जूझ रहे हो!
पूछताछ करने से कारण भी पता चल गया! कुछ विषाणु समूह तुम्हारे रक्त संचार में बाधा डाल रहे थे!
बस, मैंने तुम्हारी रक्त नलिकाओं में सूक्ष्म सर्प प्रविष्ट करवा दिए, और उन्होंने उन विषाणुओं को नष्ट करके तुम्हारे रक्त संचार को सामान्य बना दिया!
पर यह सब मैं तुमको क्यों बता रहा हूं? तुमने तो ड्रेगन-फ्लाई के जरिए मेरी जान लेने की कोशिश की थी!
मुझे भी तेरी कहानी पर जरा सा भी विश्वास नहीं है!
तूने विखंडी के जरिए दिल्ली को तबाह करने की कोशिश की! हमको नष्ट करने की कोशिश की! अब तू नष्ट होगा!
वातावरण में फैले विषाणु अपना असर दिखा रहे थे—

और मानो दो सूर्य आपस में टकराने जा रहे थे—
पहल तो तूने की थी परमाणु! ड्रेगन फ्लाई के जरिए महानगर को तबाह करने की कोशिश करके! अब तक मैं तुझे बच्चा समझकर जवाबी हमला नहीं कर रहा था!...
धड़ाक
...लेकिन अब मैं तुझे दिखाऊंगा कि हम दोनों में से सूरमा कौन है?
तूने मुझ पर हाथ उठाया? अब मैं तुझे इस धृष्टता की सजा तेरे पूरे बदन की हड्डियां तोड़कर दूंगा!
मुझे कुछ ऐसी ही धमकी तेरा गुर्गा ड्रेगन-फ्लाई भी दे रहा था!
ताड़
लेकिन मेरी विष फुंकार का एक ही वार खाकर सीधा हो गया था!
अब तू भी इसका स्वाद चखले!
फूऊऊ
ओह! इसकी विष फुंकार ने तो मुझे लगभग बेहोश कर ही दिया था! इससे ऐसे लड़कर लड़ाई नहीं जीती जा सकती। अपनी दूसरी शक्तियों का प्रयोग करना पड़ेगा!...
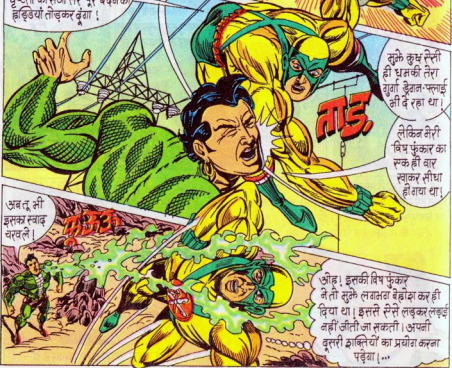
... जैसे ट्रांसमिट होने की शक्ति का !...
...ट्रांसमिट!
ठीक नागराज के बगल में प्रकट हुआ-
इस शक्ति से नागराज कभी निपट नहीं पाएगा!
आऽऽह!
तो तेरे पास ट्रांसमिट हो सकने की शक्ति है। लेकिन इस शक्ति का प्रयोग करके भी तू मुझसे जीत नहीं पाएगा!
ट्रांसमिट होता परमाणु अदृश्य होकर-
देखते हैं कि तू क्या कर पाता है ? मैं अपने शरीर की अणु कणों में बदलकर ट्रांसमिट होकर...
... एक बार फिर तेरे पीछे पहुंचकर तुझ पर हमला करूंगा!...
...अरे! यह कहां गायब हो रहा है?
यह कहां गया? क्या ट्रांसमिट होने की शक्ति इसके पास भी है?
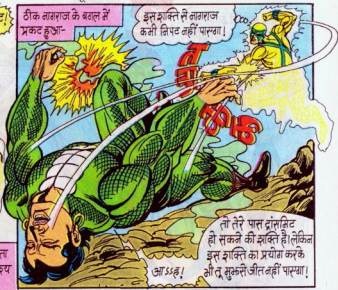
यह ट्रांसमिट होने की शक्ति नहीं है परमाणु! इसे इच्छाधारी शक्ति कहते हैं। और इस शक्ति के जरिए मैं भी अपने शरीर को कणों में बदल सकता हूं!
धड़ाक
वार भीषण था-
यह नहीं बताऊंगा कि कणों वाली स्थिति में मैं सिर्फ तीन सेकंड तक रह सकता हूं!
नागराज के मस्तिष्क में यह विचार उपजते ही उसे अपने शरीर में तैर रहे सर्पों के संकेत मिलने लगे-
कुछ पलों के लिए परमाणु, अपने होश संभालता ही रह गया-
और उसी पल नागराज जैसे गहरी नींद से जागा-
अरे! यह मैं क्या कर रहा हूं? परमाणु को समझाने के बजाय मैं उससे लड़ता जा रहा हूं। मुझे इतना क्रोध क्यों आ गया?
नागराज, तुम्हारे शरीर में कुछ विषाणु प्रविष्ट होकर तुम्हारे क्रोध को भड़का रहे थे!
हमने उनको नष्ट कर दिया है! इसीलिए तुम्हारा क्रोध भी अब नष्ट हो गया है!
ओह! परमाणु के शरीर में भी यही विषाणु घुसकर उसके क्रोध को भड़का रहे हैं!
इसी कारण वह मेरी बात नहीं समझ पा रहा है!

मेरे शरीर में तो सर्पों ने विषाणुओं को नष्ट कर दिया! परन्तु परमाणु के शरीर के प्रतिरोधक सेल, इन विषाणुओं को नष्ट करने में काफी समय ले सकते हैं!
किसी प्रकार से परमाणु के शरीर के विषाणुओं को नष्ट करना होगा! पर यह काम मैं कैसे कर सकता हूं!...
...एक रास्ता है! है तो खतरनाक, पर अगर काम कर गया तो...
...ओह! परमाणु ब्लास्ट!
हां, नागराज! जब मैं अर्द्धबेहोशी की अवस्था में था, तब तूने मुझे खत्म न करके बहुत बड़ी भूल की है!...
... क्योंकि अब मैं तुझे खत्म कर दूंगा!
खत्म तो मैं तब होऊंगा, परमाणु, जब तेरे परमाणु ब्लास्ट मुझ तक पहुंच पाएंगे!...
... तू पूरा जोर लगा ले, तेरी परमाणु ऊर्जा खत्म हो जाएगी, लेकिन तेरे ब्लास्ट मेरा हेयर स्टाइल तक नहीं बिगाड़ पाएंगे!
अगर बात ये है तो मैं ऐसा इन्तजाम करता हूं, ताकि तू ज्यादा उछल-कूद मचा ही न पाए!...

...मैं तुझे परमाणु रस्सी से जकड़ देता हूं, अब तू ज्यादा दूर तक उछल-कूद नहीं मचा पाएगा!
गुड! परमाणु ने ठीक वही किया, जो मैं चाहता था!
बस, इतना ध्यान रखना पड़ेगा कि परमाणु रस्सी मेरे एक हाथ की जकड़ने न पाए, क्योंकि उससे मुझे सर्प रस्सी छोड़नी है!
इस परमाणु रस्सी का संपर्क परमाणु से है! और यह रस्सी परमाणुओं से ही बनी है, जिसमें न्यूट्रॉन, प्रोट्रॉन के साथ इलेक्ट्रॉन भी होते हैं!
और इन इलेक्ट्रॉनों के बहाव को ही विद्युत कहते हैं! यानी यह रस्सी विद्युत की सबसे अच्छी सुचालक है!
जब यह रस्सी इन हाईटेंशन केबलों से सटेगी...
...तो विद्युत इसमें तेजी से दौड़ेगी! मैं इसी पल इच्छाधारी रूप में बदलकर परमाणु रस्सी से आजाद हो जाऊंगा!...

...लेकिन परमाणु की परमाणु रस्सी के जरिए एक जोरदार झटका लगेगा! अगर मेरा ख्याल सही है तो यह झटका जानलेवा साबित नहीं होना चाहिए!...
आर्रर्रर्रर्रर्रघ
...क्योंकि परमाणु रस्सी भी इस हाइ-वोल्टेज बिजली के संपर्क में आकर तुरन्त टूट जाएगी! लेकिन परमाणु के शरीर में दौड़ी बिजली की इस तेज लहर से इसके शरीर में मौजूद क्रोध पैदा करने वाले विषाणु नष्ट हो जाएंगे!
आह! पता नहीं मुझे क्या हो गया था नागराज! तुम्हारी बात सुनते-सुनते एकाएक न जाने क्यों मुझे गुस्सा आ गया था!
मुझे भी आ गया था! यह सब विषाणुओं का कमाल है, परमाणु! हमारा सामना जिस दुश्मन से है, वह विषाणुओं का एक्सपर्ट लगता है!
विषाणु?
और फिर नागराज, परमाणु को सारा घटनाक्रम सुनाता चला गया—
आह!
पर बीच-बीच में अपने गुप्त राज वाले कारनामों को छोड़ता भी चला गया—
ओह! तुम तो संकेत पास से ही आ रहे थे! और उसके बाद ही इन क्रोध वाले विषाणुओं का हम पर हमला हुआ!

यानी दुश्मन न सिर्फ पास है, बल्कि हमारी हरकतों पर नजर भी रख रहा है!
हाँ, परमाणु! एक बात और भी है! अगर वह हमको जानता है तो हमारी शक्तियों को भी जरूर जानता होगा। उससे मुकाबला करने से पहले हमको कुछ तैयारी कर लेनी चाहिए!
क्योंकि अगले ही पल-दोनों फ्यूजन चैंबर की तरफ बढ़ रहे थे-
और फिर उसके बाद नागराज ने परमाणु को जो कुछ भी बताया, परमाणु उससे जरूर सहमत हो गया होगा-
इस दृश्य पर नजर गड़ाए वायरस चौंक उठा-
कुछ गड़बड़ लगती है सर्जन! हमको तलाशने की कोशिश करने के बजाय ये दोनों कहीं और जा रहे हैं! कुछ गड़बड़ लगती है। हमको इनसे निपटने की तैयारी और कड़ी कर देनी चाहिए!
तुम अपने जीवित कोशिका वाले प्रोजेक्ट को निपटा दो, और मैं इनको निपटाने की तैयारी करता हूं!
समय तेजी से बीतता गया। सर्जन अपनी घातक मशीनों को तेल-पानी देकर तैयार कर रहा था। और डॉक्टर वायरस ने अपनी मंजिल का दरवाजा खोल लिया था-
याहा ssss बन गई कोशिका! अब देखो सर्जन, मैं इसमें कुछ खास जीन्स मिलाता हूं। और उसके बाद...
...उसके बाद यह जीवित कोशिका अपने-आप द्विगुणित हो-होकर कोई भी रूप धारण कर लेगी!

ये देखो! हवा के संपर्क में आते ही कोशिका को ऑक्सीजन मिल रही है, और यह विकसित होती जा रही है...
...अगर मैं इसको ऐसे ही छोड़ दूं तो यह दिल्ली जैसे शहर को भी पूरा ढक सकती है!...
...और पूरे शहर को अपना भोजन बना सकती है!
ओह! ले...लेकिन तुम इसको कंट्रोल कैसे करोगे?
वैसे तो मैंने नागराज के जहर से ही यह 'स्टेंटी वेनम स्प्रे' बनाया है। इसको स्प्रे करने से इनके 'शरीर' का जहर समाप्त हो जाएगा, और बिना उस जहर के यह जीवित कोशिका मृत हो जाएगी।
पर यह जहर मुझे बहुत कम मात्रा में प्राप्त हुआ है। इसीलिए स्टेंटी वेनम भी काफी कम मात्रा में बना है। बड़े आकार की जीवित कोशिका पर यह असर नहीं करेगा!...
फिस्स
...इसीलिए मैंने एक खास चीज और बनाई है। इस कोशिका की 'जैविक जुड़वां' यानी 'बॉयोलोजिक ट्विन'! जुड़वां इन्सानों की तरह इनका भी आपस में जैविक सम्पर्क रहता है!
एक कोशिका पर किया जाने वाला प्रहार, दूसरी कोशिका भी महसूस कर सकती है! और अगर इस कोशिका को नष्ट कर दिया जाए तो दूसरी कोशिका भी नष्ट हो जाएगी!
तो फिर देर कैसी? छोड़ दो इस जीवित कोशिका को दिल्ली पर...
...और भारत की गद्दी पर बैठे हुक्मरानों को हमारी ताकत का एहसास करा दो!
हुक्मरान बाद में...
...पहले हम तो तेरी ताकत का एहसास कर लें!
धड़ाक
नागराज और परमाणु!
तो तुम लोग आखिरकार यहां तक पहुंच ही गए!
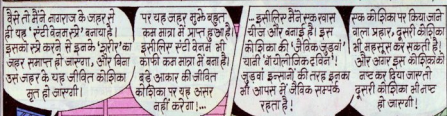
हां! एक गलती तेरी ही है, जो तू मेरे सांप यहां पर ले आया!
मेरे दूसरे सर्प उनके संकेतों का पीछा करते-करते यहां तक पहुंच गए! और उनका पीछा करते-करते हम!
तड़ाक
धड़ाक
मुझ पर और प्रोफेसर पर हमले का काम भी तुम लोगों का ही होगा! बता, वह तेरी कौन सी योजना है, जिसमें मैं रोड़ा बन रहा था?
वह तो तुझे मरकर भी नहीं पता चलेगा परमाणु! सर्जन तेरा पोस्टमार्टम करके रिपोर्ट यमराज के पास भेज देगा!
अच्छा ख्याल है सर्जन! तू परमाणु को संभाल, और मैं इस नागराज को देखता हूं!
वायरस के विषाणुओं के सामने नागराज टिक नहीं पाएगा!
वायरस और सर्जन अलग-अलग कक्षों की तरफ लपक गए। लेकिन नागराज और परमाणु के लिए उनका पीछा छोड़ने का सवाल ही नहीं था–
भागेगा कहां वायरस? मैं तुझे कहीं भागने नहीं दूंगा!
चलें?
चलें!
परमाणु ने भी सर्जन को दबोच लिया था–
तूने मुझे एकदम सही कोण से पकड़ा है परमाणु!...
...इस कोण से पकड़े जाने पर मैं...

★ बंद जगह से परमाणु न तो खुद ट्रांसमिट हो सकता है। और न ही उसे प्रोवॉट ट्रांसमिट कर सकता है।

...और जब तेरे सारे नाग मर जाएंगे, और तेरी प्रतिरोधक क्षमता खत्म हो जाएगी, तब यह सॉल्यूशन तेरे दिल, फेफड़ों और अन्य अवयवों को गलाना शुरू कर देगा...

...और फिर सिर्फ तेरी खाल और हड्डियां सलामत बचेंगी! अच्छा है न? कम से कम तेरे चाहने वाले तेरा क्रिया क्रम तो कर लेंगे!

नागराज की तड़प देखकर यह साफ पता चल रहा था कि वायरस शेखी नहीं बघार रहा था-

आऽऽऽ ह!

इधर नागराज एक-एक कदम करके मौत की तरफ बढ़ रहा था-

और उधर परमाणु मौत के जबड़ों में पहुंच चुका था-

हा हा हा! हैव ए हैप्पी क्रिया-क्रम परमाणु!

नागराज का भी जनाजा धूम से निकलेगा, सर्जन!

वायरस! नागराज भी खत्म हो गया? यानी हमारी तैयारी बेकार नहीं गई! उनके सावधान होने से पहले ही हमने उनको धर दबोचा!

पहले से ही उनकी शक्तियों का अध्ययन करके उनका काट सोचना बहुत काम आया!...

अब, जब परमाणु और साथ में नागराज का भी साया इस दुनिया से उठ चुका है, हमको देर नहीं करनी चाहिए!...

...छोड़ दो अपनी जीवित कोशिका को दिल्ली पर और बटोरने दो हमको रुपए!
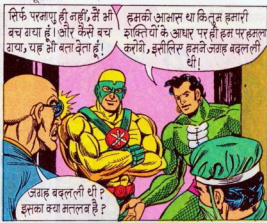
प... परमाणु ! तू... तू बच गया ? पर कैसे ?
?
सिर्फ परमाणु ही नहीं, मैं भी बच गया हूं। और कैसे बच गया, यह भी बता देता हूं!
हमको आभास था कि तुम हमारी शक्तियों के आधार पर ही हम पर हमला करोगे, इसीलिए हमने जगह बदल ली थी!
जगह बदल ली थी? इसका क्या मतलब है?
इसका मतलब यह है कि मैं नागराज हूं, परमाणु नहीं! और ये परमाणु है, नागराज नहीं! इसीलिए न तो 'स्टीवेनम स्प्रे' से इसकी परमाणु ऊर्जा खत्म हुई, और न ही 'स्टॉमिक सकर' से मेरे नाग नष्ट हुए!
हम वापस इसीलिए गए थे, ताकि नागराज तेरी दूसरी पोशाक पहन सके, और मैं नागराज की केंचुली, मॉस्क और बाकी पोशाक। उसके बाद हमने तुम पर धावा बोल दिया!
धोखा! हमारे साथ धोखा! अब अगर हम नहीं बचेंगे तो तुम भी नहीं बचोगे!
और दिल्ली भी नहीं बचेगी!
मैं इस जीवित कोशिका को दिल्ली पर छोड़ दूंगा!
और यह दिल्ली को ऐसे चाट जाएगी, जैसे चीनी को चींटी!
नागराज या परमाणु के रोक पाने से पहले ही वायरस, कोशिका को वातावरण में छोड़ चुका था-

सर्जन को बेहोश करके-
धाड़
और एक दूसरे की पोशाकों से जरूरी सामान लेकर अपने असली रूप में आने के बाद जब दोनों वायरस तक पहुंचे, तब तक बहुत देर हो चुकी थी-
ओह! लगता है इसने पहले ही कुछ गड़बड़ कर दी है परमाणु! हमको यहां पहुंचने में देर हो गई है!
तुम सही कह रहे हो, नागराज! बाहर देखो!
हे देव कालजयी!
यह जरूर जीवित कोशिका ही होगी, जो विशाल रूप धारण करती जा रही है!
इस कोशिका को इसी दुष्ट ने बनाया है! इसको रोकने या नष्ट करने का तरीका भी यह जरूर जानता होगा! बता, कमीने, कैसे नष्ट किया जा सकता है तेरे इस शैतानी अविष्कार को!
क्रोध में सुलग रहे परमाणु का वार डॉक्टर वायरस को कुछ ज्यादा ही जोर से लग गया-
तड़ाक
छनन
हवा में उड़ता हुआ, उसका सिर जुड़वां जीवित कोशिका वाले कंटेनर से टकराया, और कंटेनर टूट गया-

केंद्र से आजाद होकर हवा के संपर्क में आते ही जुड़वां कोशिका सक्रिय हो उठी-
और शीशे को तोड़ती हुई दूसरी विशाल कोशिका के साथ जा मिली-
यह क्या किया मूर्ख! यह कोशिका, दूसरी कोशिका की जुड़वां थी। इसको नष्ट करने से वह बड़ी कोशिका भी नष्ट हो जाती...
...यह एकमात्र रास्ता था कोशिका को नष्ट करने का! और तुम्हारी गलती से वह रास्ता बन्द हो गया है। अब इस कोशिका को दिल्ली चट करने से कोई भी नहीं रोक सकता!
ओह! अब क्या करें?
अब जो कुछ करना है, वह बाहर जाकर ही करना होगा परमाणु...
...क्योंकि वह कोशिका उन इमारतों तक पहुंच चुकी है! और लगता है वह उनको खाने की फिराक में भी है!
तब तो इसको परमाणु किरणों से ही नष्ट करना होगा! लेकिन बाहर जाने से पहले वायरस को बांध दिया जाए!
बांध दो! सर्जन को तो मैं पहले ही नागरस्सी से बांध चुका हूं!
वायरस को 'परमाणु रस्सी' से बांधने के अगले ही पल-
दोनों कोशिका की तरफ लहरा गए-

लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। कोशिका से द्विगुणित होकर कई अजीबो-गरीब रूप कोशिका से अलग होकर अलग-अलग ठिकानों पर टूट पड़े थे-
यह तो रुकनहीं, कई कोशिका प्राणी हो गए हैं!... इनकी संख्या बढ़ने से पहले ही इनको समाप्त कर देना होगा!
इनको समाप्त करने के साथ-साथ इस कोशिका को भी समाप्त करना होगा! वरना ये प्राणी बढ़ते ही रहेंगे। तुम मुख्य कोशिका से निपटो, और मैं दूसरे कोशिका के प्राणियों से निपटता हूं!
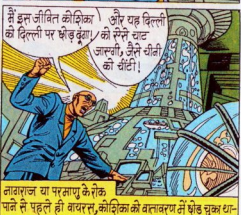
परमाणु और नागराज ने अपने-अपने दुश्मनों को चुन लिया-
कड़ड़ड़
यह मेरे 'परमाणु ब्लास्ट' का एक वार भी सह नहीं पाएगा... अरे!
न सिर्फ यह मेरा वार झेल गया, बल्कि यह अपना एक तंतु बढ़ाकर मुझे अपनी लपेट में भी ले रहा है!
आह! मेरे शरीर में जैसे सैकड़ों सुइयां एक साथ चुभ रही हैं! मेरी एब्सेस्ट्स की पोशाक भी इसे रोक नहीं पा रही है! ट्रांसमिट!
ट्रांसमिट होकर नीचे पहुंचते ही परमाणु को एक झटका और लगा-
अरे! यह तो मुझे गलाने जा रहा था! पर शरीर गलने से पहले ही मैं ट्रांसमिट हो गया! अपनी परमाणु किरणों की तीव्रता बढ़ाकर, इस पर जोरदार वार करना होगा!

परमाणु ने वार तो भीषण किया था, पर इस बार उसको एक और आश्चर्य का सामना करना था–
वह प्राणी न सिर्फ परमाणु ऊर्जा को सोख गया, बल्कि पलटकर उसी ऊर्जा का वार परमाणु पर ही कर दिया–
आऽऽऽह! इनमें तो अजीब शक्तियां हैं! कोई और तरीका सोचना पड़ेगा! अभी तो मैं एक ही कोशिका प्राणी को नष्ट नहीं कर पाया हूं, और ये संख्या में बढ़ते जा रहे हैं!
नागराज भी सफल नहीं हो पा रहा था–
विषफुंकार और नागसेना तो बेअसर रही हैं! अब विषदंश का प्रयोग करके देखता हूं! उससे यह कोशिका जरूर गल जाएगी!
नागराज यह नहीं जानता था कि जिस विष का प्रयोग करके वह इस जीवित कोशिका को गलाने जा रहा था–
यह कोशिका उसी विष के सहारे जीवित रहती और बढ़ती है–
आऽऽह! मेरे विषदंश का प्रयोग करते ही गलने के बजाय यह और विशाल हो गई है! और मुझ पर हमला करके, अब मुझे गलाने की कोशिश कर रही है!
शिकंजा बहुत मजबूत है! इसको मैं खोल नहीं पा रहा हूं! इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है!
ओह! सारे वार कर लिए, लेकिन इस पर कोई असर नहीं हो रहा है परमाणु!
मेरे वार भी विफल रहे हैं। लड़ने से पहले दुश्मन की खासियतों को जान लेना चाहिए! प्रोबॉट से इस कोशिका का विश्लेषण करके बताने को कहता हूं!
परमाणु से निर्देश मिलते ही प्रोबॉट ने कोशिका का विश्लेषण करना शुरू कर दिया–
इस कोशिका पर परमाणु वार बेअसर रहेंगे परमाणु!...

... क्योंकि नष्ट होते ही इसके तंतु फिर से तेजी से बढ़कर उस स्थान को भर देते हैं। साथ ही साथ ऊर्जा को इसके शरीर के विशाल सेल सोख लेते हैं। और शायद डिस्चार्ज भी कर लेते हैं!

ये सारे एक कोशिका प्राणी हैं। इनको नष्ट करने का एकमात्र तरीका यह है कि इनके शरीर में मौजूद जीवित पदार्थ प्रोटोप्लाज्म को नष्ट कर दिया जाए। मुख्य कोशिका प्राणी में इस प्रोटोप्लाज्म के स्थान पर तेज जहर भरा है!

SPECTROMETER

लेकिन अन्य कोशिका प्राणियों में यह जहर बहुत थोड़ी मात्रा में मौजूद है। साथ ही साथ उसमें प्रोटोप्लाज्म भी मौजूद है। मुख्य समस्या उस प्रोटोप्लाज्म तक पहुंचना है। क्योंकि ये प्राणी किसी भी हथियार या हानिकारक वस्तु को वहां तक पहुंचने से पहले ही गला डालेंगे! और कुछ? कोई शक या कोई सवाल?

नहीं, प्रोबॉट! ओवर!

कोशिका में जरूर मेरा ही जहर भरा होगा!

इसीलिए वायरस ने मेरे नागों को महानगर से मंगवाया होगा!

इन कोशिका प्राणियों में घुसकर प्रोटोप्लाज्म को नष्ट करना होगा। पर कैसे? वहां तक पहुंचने से पहले ही ये हमें गला डालेंगे!

मैं प्रोटोप्लाज्म केन्द्रों को नष्ट कर सकता हूं, नागराज! इस बेल्ट की मदद से मैं अमीबा के आकार तक छोटा हो सकता हूं। उस आकार में आने पर मेरा घनत्व इतना बढ़ जाएगा कि मेरे अत्यन्त ठोस शरीर को यह कोशिकाएं गला नहीं पाएंगी। और उस रूप में मैं इनके शरीरों में मौजूद सैकड़ों-हजारों प्रोटोप्लाज्म केन्द्रों को उड़ता हुआ नष्ट कर दूंगा!

ज़िंक!

उसके केन्द्र में मेरा जहर भरा हुआ है। और इसका आकार बढ़ने के साथ-साथ उस जहर की मात्रा भी अवश्य ही बढ़ गई होगी। तुम्हारे शरीर का घनत्व चाहे कितना ही क्यों न बढ़ जाए, अगर तुम उस जहर से होकर निकलोगे तो तुम्हारा शरीर गल जाएगा!

शुरुआत मुख्य कोशिका को नष्ट करके ही करता हूं! ताकि यह और कोशिका प्राणियों को जन्म दे ही न सके!

नहीं, परमाणु! यह गलती मत करना!

ओह! तब मैं छोटे कोशिका प्राणियों को नष्ट करता हूं। मुख्य कोशिका को मैं तुम्हारे जिम्मे पर छोड़ता हूं!

लेकिन उसके साथ-साथ नए-नए प्राणी पैदा हो रहे थे। और इसको रोकने की जिम्मेदारी नागराज की थी-

यहां रुककर कुछ नहीं होगा! मेरे पास सिर्फ जहरीले वार कर सकने की शक्ति है! और जहर से इस कोशिका प्राणी की शक्ति और बढ़ जाती है! मुझे वायरस के पास जाना होगा। और इसे रोकने का रास्ता पूछना होगा! ऐसा जरूर कुछ और रास्ता होगा जिससे इस विनाशकारी प्राणी को नष्ट किया जा सके!

पूरी मानवता का रक्षक है। और उसे बचाने के लिए वह अपनी जान भी सहर्ष लुटा सकता है-

वायरस की लैब में पहुंचते ही-

बता, उस कोशिका को रोकने का दूसरा तरीका क्या है? वर्ना आज मैं तुझे ही उस कोशिका का भोजन बना दूंगा!

नहीं ऽऽऽ बताता हूं। बताता हूं। उस कोशिका को मारने का दूसरा उपाय है...

...पर वह काम असंभव है!

असंभव क्यों?

क्योंकि इस कोशिका को खत्म करने का दूसरा तरीका तुम्हारे ही जहर से बने 'एंटीविनम' द्वारा कोशिका पर वार करना है। उससे कोशिका के प्रोटोप्लाज्म केन्द्र का जहर समाप्त हो जाएगा और जहर खत्म होने से कोशिका खत्म हो जाएगी। ...

...लेकिन अब कोशिका के जहर को निष्क्रिय कर सकने लायक एंटी वेनम बनाने के लिए अब शायद तुम्हारे शरीर के पूरे जहर और खून की आवश्यकता पड़ेगी।

और अगर इस काम में थोड़ी सी भी देर हुई तो कोशिका और विशाल हो चुकी होगी, और तब तुम्हारा पूरा जहर भी उसे खत्म नहीं कर पाएगा!

यह काम इसीलिए असंभव है, क्योंकि तुम्हारा पूरा जहर या खून निकाला हीं नहीं जा सकता।

और अगर तुम निकाल भी दोगे, तो उसे एंटी वेनम बनाने में समय लगेगा!

वायरस की बात सुनते-सुनते नागराज एक दृढ़ निश्चय कर चुका था-

मेरे खून और जहर से एंटी वेनम कैसे बन सकता है?

इस बीकर में रखे, सॉल्यूशन में मिलाकर! खून और जहर में सॉल्यूशन मिलने के पांच मिनट के अंदर प्रक्रिया पूरी हो जाएगी। और जहर, जहर की काट बन जाएगा।

वायरस की बात पूरी होते ही नागराज वह बीकर उठाकर पूरा सॉल्यूशन पी गया-

य... यह क्या?

खून निकालने की जरूरत नहीं है वायरस! मैं ऐसे ही अपने शरीर के जहर को मार देता हूं!

पर... पर बिना जहर के तुम जिन्दा नहीं रह पाओगे, नागराज!

मुझे पता है वायरस! लेकिन मेरी एक जान की कीमत सैकड़ों जानों के सामने कुछ भी नहीं है। मेरे शरीर के सर्प तेजी से मर रहे हैं। क्योंकि बिना जहर के वे जीवित नहीं रह सकते! यह नागरस्सी भी जल्दी ही निकलनी बन्द हो जाएगी। उससे पहले ही मुझे मुख्य जीवित कोशिका तक पहुंचना होगा!

इधर परमाणु द्रुत गति से उड़ता हुआ कोशिका प्राणियों को एक-एक करके नष्ट कर रहा था-
और उधर नागराज, मुख्य कोशिका के सामने पहुंच चुका था-
आऽऽऽह! सर्प निकलने बन्द हो गए हैं! और मुझे भी अत्यधिक कमजोरी लग रही है। यह इसी बात का लक्षण है कि मेरे शरीर का सारा विष, प्रतिविष यानी एंटी वेनम बन गया है!
अब अगर मैं अपने-आपको इस कोशिका में झोंक दूं तो यह मुझे जकड़कर मेरा शरीर खाने की कोशिश अवश्य करेगी...
...इस कोशिका में यह मेरा शरीर तो जरूर गला डालेगी, लेकिन मेरे शरीर के अंदर मेरा एंटीवेनम भी इस कोशिका के अन्दर पहुंच जाएगा!
इसके केन्द्र में भरा तेज जहर निष्क्रिय ही जाएगा, और यह कोशिका मर जाएगी।
मानवों को विनाश से बचाने के लिए नागराज अपना अनुकरणीय बलिदान करने जा रहा था-

अब तक परमाणु अंतिम कोशिका प्राणी को नष्ट करके अपने सामान्य रूप में आ गया था-
और अब तक नागराज के शरीर का सारा द्रव चूस चुकी कोशिका भी प्रोटोप्लाज्म केन्द्र का जहर समाप्त होने के कारण तेजी से सिकुड़ती जा रही थी-
... और कोई कोशिका प्राणी पैदा नहीं हो रहा है। यानी नागराज ने मुख्य कोशिका को समाप्त कर दिया है। पर... पर यह क्या? नागराज तो लगभग मृत लग रहा है! उसका शरीर भी जगह-जगह से गल गया है! पर कैसे?
मुझे इसे जमीन से टकराने से रोकना होगा!
नागराज! तुमको क्या हो गया है नागराज? आँखें खोलो!
मैंने अपने शरीर... अह... के जहर को... प्रतिविष में बदलकर कोशिका को... नष्ट कर दिया है। पर... अब मैं नहीं बच सकता!
क्योंकि मेरे शरीर का जहर... अह... समाप्त हो गया है! और मैं बिना जहर के जिन्दा नहीं रह सकता!
मुझे नागराज को देखने दीजिए! मैं शायद कुछ मदद कर सकूं!
ओजस्वी वाणी थी वह-
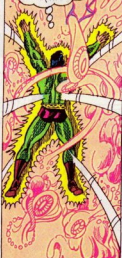
★ जो पाठक इस शख्सियत को नहीं पहचान पाए हैं, उनके लिए हम इनका नाम एक बार फिर बता देते हैं। ये देव कालजयी हैं। इनके बारे में जानने के लिये पढ़ें नागराज के विशेषांक नागपाशा व खजाना

समाप्त.